प्रभात फेरी

भगवन्नाम महिमा

रस सागर गोविन्द नाम है रसना जो तू गाये।
तो जड़ जीव जनम की तेरी बिगड़ी हू बन जाये॥

प्रकाशक

श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान

गहवर वन, बरसाना, मथुरा

उत्तर प्रदेश २८१ ४०५

भारतवर्ष

अंतर्वस्तु

प्रकाशकीय

जिस प्रकार अनादि अनन्तकाल से अन्धकाराच्छन्न भवन के घोर अन्धकार को दीपज्योति क्षणभर में निकाल फेंकती है, ठीक उसी प्रकार आज के नानाविधि संतापों से संतप्त जीव को त्राण प्राप्ति का सुगम व सुलभ साधन क्या हो सकता है ? अनन्तकाल से अनन्त योनियों में भ्रमित जीव अनन्त यातनाओं को भोगकर भगवत्कृपा से देवदुर्लभ मनुष्य शरीर प्राप्त करता है परन्तु यदि किसी निष्किञ्चन महापुरुष का संग नहीं मिल पाये तो पुनः उन्हीं अनन्त यातनाओं को भोगता है। इस तरह कभी समाप्त न होने वाले असह्य कष्टों से मुक्ति नहीं पाता। संतजन बड़े दयालु और करुणा-वरुणालय होते हैं जो ऐसा सुलभ मार्ग दिखाते हैं जिससे सभी जड़-चेतन सहज में ही भगवत्प्राप्ति कर लेते हैं और शाश्वत सुख की प्राप्ति कर पाते हैं। ऐसे ही ब्रजोद्धारक **परम विरक्त संत श्री श्री रमेश बाबा जी महाराज** जिन्होंने श्री मानमंदिर गह्वरवन बरसाना में श्री राधा चरण-शरण का आश्रय ले भगवन्नाम प्रभातफेरी के शंखनाद से तीसों हजार से अधिक गाँवों को आलोकित किया है, वही सरल व सुगम मार्ग हम सबके लिए एक पुष्प 'प्रभात फेरी' के नाम से प्रस्तुत है।

श्री रमेश बाबा जी महाराज

गुण-गरिमागार, करुणा-पारावार, युगललब्ध-साकार इन विभूति विशेष गुरुप्रवर पूज्य बाबाश्री के विलक्षण विभा-वैभव के वर्णन का आद्यन्त कहाँ से हो यह विचार कर मंद मति की गति विथकित हो जाती है।

विधि हरि हर कवि कोविद बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी॥
सो मो सन कहि जात न कैसे। साक बनिक मनि गुन गन जैसे॥

(रा.बा.का.दोहा.३क)

पुनरपि

जो सुख होत गोपालहिं गाये।
सो सुख होत न जप तप कीन्हे कोटिक तीरथ न्हाये।

(सू. वि. प.)

अथवा

रस सागर गोविन्द नाम है रसना जो तू गाये।
तो जड़ जीव जनम की तेरी बिगड़ी ह्व बन जाये॥
जनम-जनम की जाये मलिनता उज्ज्वलता आ जाये॥

(बाबा श्री द्वारा रचित - ब्र. भा. मा.से संग्रहीत)

कथनाशय इस पवित्र चरित्र के लेखन से निज कर व गिरा पवित्र करने का स्वसुख व जनहित का ही प्रयास है।

अध्येतागण अवगत हों इस बात से कि यह लेख, मात्र सांकेतिक परिचय ही दे पायेगा, अशेष श्रद्धास्पद (बाबाश्री) के विषय में। सर्वगुणसमन्वित इन दिव्य विभूति का प्रकर्ष आर्ष जीवन चरित्र कहीं लेखन-कथन का विषय है?

"करनी करुणासिन्धु की मुख कहत न आवै"

(सू.वि. प.)

मलिन अन्तस् में सिद्ध संतों के वास्तविक वृत्त को यथार्थ रूप से समझने की क्षमता ही कहाँ, फिर लेखन की बात तो अतीव दूर है तथापि इन लोक-लोकान्तरोत्तर विभूति के चरितामृत की श्रवणाभिलाषा ने

असंख्यों के मन को निकेतन कर लिया अतएव सार्वभौम महत् वृत्त को शब्दबद्ध करने की धृष्टता की।

तीर्थराज प्रयाग को जिन्होंने जन्मभूमि बनने का सौभाग्य-दान दिया। माता-पिता के एकमात्र पुत्र होने से उनके विशेष वात्सल्यभाजन रहे। ईश्वरीययोजना ही मूल हेतु रही आपके अवतरण में। दीर्घकाल तक अवतरित दिव्य दम्पति स्वनामधन्य श्री बलदेव प्रसाद शुक्ल (शुक्ल भगवान् जिन्हें लोग कहते थे) एवं श्रीमती हेमेश्वरी देवी को संतान सुख अप्राप्य रहा, संतान प्राप्ति की इच्छा से कोलकाता के समीप तारकेश्वर में जाकर आर्त पुकार की, परिणामतः सन् १९३० पौष मास की सप्तमी को रात्रि ९:२७ बजे कन्यारत्न श्री तारकेश्वरी (दीदी जी) का अवतरण हुआ अनन्तर दम्पत्ति को पुत्र कामना ने व्यथित किया। पुत्र प्राप्ति की इच्छा से कठिन यात्रा कर रामेश्वर पहुँचे, वहाँ जलान्न त्याग कर शिवाराधन में तल्लीन हो गये, पुत्र कामेष्टि महायज्ञ किया। आशुतोष हैं रामेश्वर प्रभु, उस तीव्राराधन से प्रसन्न हो तृतीय रात्रि को माता जी को सर्वजगन्निवासावास होने का वर दिया। शिवाराधन से सन् १९३८ पौष मास कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को अभिजित मुहूर्त मध्याह्न १२ बजे अद्भुत बालक का ललाट देखते ही पिता (विश्व के प्रख्यात व प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य) ने कह दिया –

"यह बालक गृहस्थ ग्रहण न कर नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही रहेगा, इसका प्रादुर्भाव जीव-जगत के निस्तार निमित्त ही हुआ है।"

वही हुआ, गुरु-शिष्य परिपाटी का निर्वाहन करते हुए शिक्षाध्ययन को तो गये किन्तु बहु अल्प काल में अध्ययन समापन भी हो गया।

"अल्पकाल विद्या बहु पायी"

गुरुजनों को गुरु बनने का श्रेय ही देना था अपने अध्ययन से। सर्वक्षेत्र कुशल इस प्रतिभा ने अपने गायन-वादन आदि ललित कलाओं से विस्मयान्वित कर दिया बड़े-बड़े संगीतमार्तण्डों को। प्रयागराज को भी स्वल्पकाल ही यह सानिध्य सुलभ हो सका "तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि" ऐसे

अचिन्त्य शक्ति सम्पन्न असामान्य पुरुष का। अवतरणोद्देश्य की पूर्ति हेतु दो बार भागे जन्मभूमि छोड़कर ब्रजदेश की ओर किन्तु माँ की पकड़ अधिक मजबूत होने से सफल न हो सके। अब यह तृतीय प्रयास था, इन्द्रियातीत स्तर पर एक ऐसी प्रक्रिया सक्रिय हुई कि तृणतोड़नवत् एक झटके में सर्वत्याग कर पुनः गति अविराम हो गई ब्रज की ओर।

चित्रकूट के निर्जन अरण्यों में प्राण-परवाह का परित्याग कर परिभ्रमण किया, सूर्यवंशमणि प्रभु श्रीराम का यह वनवास स्थल पूज्यपाद का भी वनवास स्थान रहा। "स रक्षिता रक्षति यो हि गर्भे" इस भावना से निर्भीक घूमे उन हिंसक जीवों के आतंक संभावित भयानक वनों में।

आराध्य के दर्शन को तृषान्वित नयन, उपास्य को पाने के लिए लालसान्वित हृदय अब बार-बार पाद-पद्मों को श्रीधाम बरसाने के लिए ढकेलने लगा, बस पहुँच गए बरसाना। मार्ग में अन्तस् को झकझोर देने वाली अनेकानेक विलक्षण स्थितियों का सामना किया। मार्ग का असाधारण घटना संघटित वृत्त यद्यपि अत्यधिक रोचक, प्रेरक व पुष्कल है तथापि इस दिव्य जीवन की चर्चा स्वतन्त्र रूप से भिन्न ग्रन्थ के निर्माण में ही सम्भव है अतः यहाँ तो संक्षिप्त चर्चा ही है। बरसाने में आकर तन-मन-नयन आध्यात्मिक मार्गदर्शक के अन्वेषण में तत्पर हो गए। श्रीजी ने सहयोग किया एवं निरंतर राधारससुधा सिन्धु में अवस्थित, राधा के परिधान में सुरक्षित, गौरवर्णा की शुभ्रोज्ज्वल कान्ति से आलोकित-अलंकृत युगल सौख्य में आलोडित, नाना पुराणनिगमागम के ज्ञाता, महावाणी जैसे निगूढ़ात्मक ग्रन्थ के प्राकट्यकर्ता "अनन्त श्री सम्पन्न श्री श्री प्रियाशरण जी महाराज" से शिष्यत्व स्वीकार किया।

ब्रज में भामिनी का जन्म स्थान बरसाना, बरसाने में भामिनी की निज कर निर्मित गहवर वाटिका "बीस कोस वृन्दाविपिन पुर वृषभानु उदार, तामें गहवर वाटिका जामें नित्य विहार" और उस गहवरवन में भी महासदाशया मानिनी का मन-भावन मान-स्थान श्री मानमंदिर ही मानद (बाबाश्री) को मनोनुकूल लगा। मानगढ़, ब्रह्माचलपर्वत की चार शिखरों में

से एक महान शिखर है। उस समय तो यह बीहड़ स्थान दिन में भी अपनी विकरालता के कारण किसी को मंदिर प्रांगण में न आने देता। मंदिर का आंतरिक मूल स्थान चोरों को चोरी का माल छिपाने के लिए था। चौराग्रगण्य की उपासना में इन विभूति को भला चोरों से क्या भय?

भय को भगाकर भावना की – "तस्कराणां पतये नमः" – चोरों के सरदार को प्रणाम है, पाप-पंक के चोर को भी एवं रकम-बैंक के चोर को भी। ब्रजवासी चोर भी पूज्य हैं हमारे, इस भावना से भावित हो द्रोहार्हणों (द्रोह के योग्य) को भी कभी द्रोहदृष्टि से न देखा, अद्वेष्टा के जीवन्त स्वरुप जो ठहरे। फिर तो शनैः-शनैः विभूति की विद्यमत्ता ने स्थल को जाग्रत कर दिया, अध्यात्म की दिव्य सुवास से परिव्याप्त कर दिया।

जग-हित-निरत इस दिव्य जीवन ने असंख्यों को आत्मोन्नति के पथ पर आरूढ़ कर दिया एवं कर रहे हैं। श्रीमन् चैतन्यदेव के पश्चात् कलिमलदलनार्थ नामामृत की नदियाँ बहाने वाली एकमात्र विभूति के सतत् प्रयास से आज ३२ हजार गाँवों में, प्रभातफेरी के माध्यम से नाम निनादित हो रहा है। ब्रज के कृष्ण लीला सम्बंधित दिव्य वन, सरोवर, पर्वतों को सुरक्षित करने के साथ-साथ सहस्रों वृक्ष लगाकर सुसज्जित भी किया। अधिक पुरानी बात नहीं है, आपको स्मरण करा दें, सन् २००९ में "राधारानी ब्रजयात्रा" के दौरान ब्रजयात्रियों को साथ लेकर स्वयं ही बैठ गये आमरण अनशन पर, इस संकल्प के साथ कि जब तक ब्रज पर्वतों पर हो रहे खनन द्वारा आघात को सरकार रोक नहीं देगी, मुख में जल भी नहीं जायेगा। समस्त ब्रजयात्री भी निष्ठापूर्वक अनशन लिए हुए हरिनामसंकीर्तन करने लगे और उस समय जो उद्दाम गति से नृत्य-गान हुआ, नाम के प्रति इस अटूट आस्था का ही परिणाम था कि १२ घंटे बाद ही विजयपत्र आ गया। दिव्य विभूति के अपूर्व तेज से साम्राज्य सत्ता भी नत हो गयी। गौवंश के रक्षार्थ गत् ६ वर्ष पूर्व माता जी गौशाला का बीजारोपण किया था, देखते ही देखते आज उस वट बीज ने विशाल तरु का रूप ले लिया, जिसके आतपत्र (छाया) में आज 35,000 गायों का

मातृवत् पालन हो रहा है। संग्रह परिग्रह से सर्वथा परे रहने वाले इन महापुरुष की भगवन्नाम ही एकमात्र सरस सम्पत्ति है।

यही करुणा करना करुणामयी मम अंत होय बरसाने में ।
पावन गह्वरवन कुञ्ज निकट रज में रज होय मिलूँ ब्रज में ॥

(बाबा श्री द्वारा रचित – ब्र.भा.मा. से संग्रहीत)

परम विरक्त होते हुए भी बड़े-बड़े कार्य संपादित किये, इन ब्रज संस्कृति के एकमात्र संरक्षक, प्रवर्द्धक व उद्धारक ने, गत षष्टि (६०) वर्षों से ब्रज में क्षेत्रसन्यास (ब्रज के बाहर न जाने का प्रण) लिया एवं इस सुदृढ़ भावना से विराज रहे हैं। ब्रज, ब्रजेश व ब्रजवासी ही आपका सर्वस्व हैं। असंख्यों आपके सान्निध्य-सौभाग्य से सुरभित हुये, आपके विषय में जिनके विशेष अनुभव हैं, विलक्षण अनुभूतियाँ हैं, विविध विचार हैं, विपुल भाव साम्राज्य है, विशद अनुशीलन हैं, इस लोकोत्तर व्यक्तित्व ने विमुग्ध कर दिया है विवेकियों का हृदय। वस्तुतः कृष्णकृपालब्ध पुमान् को ही गम्य हो सकता है यह व्यक्तित्व। रसोदधि के जिस अतल-तल में आपका सहज प्रवेश है, यह अतिशयोक्ति नहीं कि रस ज्ञाताओं का हृदय भी उस तल से अस्पृष्ट ही रह गया।

आपकी आंतरिक स्थिति क्या है, यह बाहर की सहजता, सरलता को देखते हुए सर्वथा अगम्य है। आपका अन्तरंग लीलानंद, सुगुप्त भावोत्थान, युगल मिलन का सौख्य इन गहन भाव-दशाओं का अनुमान आपके सृजित साहित्य के पठन से ही संभव है। आपकी अनुपम कृतियाँ – श्री रसिया रासेश्वरी, स्वर वंशी के शब्द नूपुर के, ब्रजभावमालिका, भक्तद्वय चरित्र इत्यादि हृदयद्रावी भावों से भावित कृतियाँ हैं।

आपका त्रैकालिक सत्संग अनवरत चलता ही रहता है। साधक-साधु-सिद्ध सबके लिए सम्बल हैं आपके त्रैकालिक रसार्द्रवचन। दैन्य की सुरभि से सुवासित अद्भुत असमोर्ध्व रस का प्रोज्ज्वल पुंज है यह दिव्य रहनी, जो अनेकानेक पावन आध्यात्मास्वाद के लोभी मधुपों का आकर्षण केंद्र

बन गयी। सैकड़ों ने छोड़ दिए घर-द्वार और अद्यावधि शरणागत हैं। ऐसा महिमान्वित-सौरभान्वित वृत्त विस्मयान्वित कर देने वाला स्वाभाविक है।

रस-सिद्ध-संतों की परम्परा इस ब्रजभूमि पर कभी विच्छिन्न नहीं हो पायी। श्रीजी की यह गह्वर वाटिका जो कभी पुष्पविहीन नहीं होती, शीत हो या ग्रीष्म, पतझड़ हो या पावस, एक न एक पुष्प तो आराध्य के आराधन हेतु प्रस्फुटित ही रहता है। आज भी इस अजरामर, सुन्दरतम, शुचितम, महत्तम, पुष्प (बाबाश्री) का जग स्वस्तिवाचन कर रहा है। आपके अपरिसीम उपकारों के लिए हमारा अनवरत वंदन, अनुक्षण प्रणति भी न्यून है।

प्रार्थना है अवतरित प्रीति-प्रतिमा विभूति से कि निज पादाम्बुजों का अनुगमन करने की शक्ति हम सबको प्रदान करें।

आपकी प्रेम प्रदायिका, परम पुनीता पद-रज-कणिका को पुनः-पुनः प्रणाम है।

विश्व की समस्त समस्याओं का निदान एकमात्र भगवन्नाम

बहुत से लोग प्रश्न करते हैं कि दिन-रात कलियुग का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, ऐसी स्थिति में संसार का कल्याण कैसे होगा?

बात सत्य है। सारे विश्व में आज बेरोजगारी, कलह, युद्ध, आतंकवाद आदि समस्यायें बढ़ रही हैं। इसका मुख्य कारण बहिर्मुखता ही है। हमारे देश में ऐसे-ऐसे राजा हुए जिन्होंने सत्ययुग आदि में करोड़ों वर्ष राज्य किया। सुख शान्ति बनी रही। सदा सुकाल की स्थिति रही। अब अकाल की ओर विश्व बढ़ रहा है। जैसे – सारे संसार में जलसंकट बढ़ता जा रहा है। नदियों में, सरोवरों में, कूपों में, खेतों के नलकूपों में पानी घटता जा रहा है। इसी तरह से घटता रहा तो कुछ दिनों में अकाल की स्थिति निश्चित होगी। रामायण में यह भविष्यवाणी पहले ही हो चुकी है –

कलि बारहि बार दुकाल परै ।
बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै ॥

(रा.च.मा.उत्तर. १०१)

शासक लोग घोटाला करेंगे। प्रजा को लूटेंगे –

नृप पाप परायन धर्म नहीं ।
करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं ॥

(रा.च.मा.उत्तर. १०१)

देश की और विश्व की इन समस्त समस्याओं का निराकरण शास्त्रों में एक ही बताया गया है –

तस्मात् सङ्कीर्तनं विष्णोर्जगन्मङ्गलमंहसाम् ॥

(भा. ६/३/३१)

अर्थ – भगवन्नाम-संकीर्तन किया जाय, इसी से संसार का कल्याण होगा।

भगवन्नाम से ही हुआ भारत देश स्वतन्त्र

अधिकांश लोग इस बात को नहीं जानते होंगे कि भारत देश स्वतन्त्र भगवन्नाम-कीर्तन से ही हुआ था। सन् १९२९ में महात्मा गाँधी और सरदार वल्लभभाई पटेल ब्रजभूमि 'गिरि-गोवर्धन' में भजन-साधन में लगे हुए संत श्री पं. रामकृष्ण बाबा के पास आये थे, उस समय वहाँ परमपूज्य संत श्री प्रियाशरण जी महाराज भी बैठे हुए थे; पण्डित बाबा से गाँधी जी ने प्रश्न किया कि सन् १८५७ के पहले से भारत-स्वतन्त्रता का आन्दोलन चल रहा है परन्तु अनवरत् प्रयास के बाद भी अभी तक सफलता क्यों नहीं दिखाई देती?"

पं. बाबा का उत्तर था –

"बिना भगवन्नाम-संकीर्तन के सफलता संभव नहीं है।"

यह संत-वचन गाँधी जी को आत्मस्थ हो गये और उन्होंने जाकर "रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम" कीर्तन आरम्भ किया। सन् १९४७ में स्वतन्त्रता-आन्दोलन की सफलता सर्वसमक्ष हो गयी।

सबसे बड़ा बल भगवन्नाम

गौरांग महाप्रभु का प्रेमावातार था, उन्होंने ऐसी लड़ाई लड़ी कि जिसे समझना बहुत कठिन है। सच्चे साधु उसी लड़ाई को लड़ते हैं जैसे कि रामायण में कहा गया है –

नाम कामतरु काल कराला ।
सुमिरत समन सकल जग जाला ॥

(रा.च.मा.बाल. २७)

अर्थात् कलियुग में अनेक प्रकार के पाप, दुराचार बढ़ते हैं, उनसे लड़ने के लिए सैन्य-शक्ति (man power) या आणविक शक्ति (atomic power) काम नहीं देगी। उसको जीतने के लिए भगवान् का नाम ही काम देगा।

महाप्रभु जी ने भगवन्नाम संसार को दिया, उससे कलियुग की शक्ति क्षीण हुई। युग के दोषों को जीतने के लिए – ऐटम बम, हाइड्रोजन बम, न्यूट्रान बम आदि सब फेल हैं इसलिए उन्होंने भगवन्नाम दिया।

सभी संतों ने कलियुग में नाम देने का प्रयास किया।

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम् ।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥

कलियुग में केवल हरिनाम, हरिनाम और हरिनाम से ही उद्धार हो सकता है। हरिनाम के अलावा इस कलियुग में उद्धार का अन्य कोई भी उपाय नहीं है ! नहीं है ! नहीं है।

भगवन्नाम से ही विश्व की शान्ति, विश्व का कल्याण, समाज का सुधार हो सकता है। जैसे कालकूट जहर फैला, सारा संसार उसमें जलने लगा, उस जहर को नाम के प्रभाव से शिवजी ने पी लिया।

नाम प्रभाउ जान सिव नीको ।
कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥

(रा.च.मा.बाल. १९)

एक बार मानमंदिर से प्रतिवर्ष संचालित श्रीराधारानी ब्रज-यात्रा में महामारी फैल गयी थी, उस समय पूज्य बाबा महाराज ने यह पद गाया –

आधो नाम तारिहैं श्रीराधा ।
जुग अक्षर की महिमा को कहे, गावत वेद पुरान अगाधा ॥
'रा' के कहे रोग सब मिटिहैं, 'धा' के कहे मिटै भव बाधा ।
अलि किशोरी नाम रटत नित, लागी रहत समाधा ॥

...तो उसी समय सब लोग ठीक होने लगे।

नाम में अनन्त शक्ति है, एक नाम ही जीव का कल्याण कर सकता है परन्तु हम लोग नाम के बदले में लौकिक वस्तुयें – देहसुख, प्रतिष्ठा, पैसा आदि चाहते हैं। हमें भगवान् के नाम से प्रेम नहीं है, पैसे से प्रेम है, इसलिए उसका यथार्थ फल (भगवद्-प्रेम) नहीं मिल पाता है।

हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद से कहा था –

क्रुद्धस्य यस्य कम्पन्ते त्रयो लोकाः सहेश्वराः ।
तस्य मेऽभीतवन्मूढ शासनं किम्बलोऽत्यगाः ॥

(भा. ७/८/७)

मेरे सामने कोई खड़ा नहीं हो सकता। ब्रह्मा, शंकर आदि सब मेरे भय से काँपते हैं और बड़ा आश्चर्य है कि तू एक छोटा-सा लड़का मुझसे डर नहीं रहा है, तेरे पास क्या ताकत है?

प्रह्लाद जी ने कहा –

न केवलं मे भवतश्च राजन् स वै बलं बलिनां चापरेषाम् ।
परेऽवरेऽमी स्थिरजङ्गमा ये ब्रह्मादयो येन वशं प्रणीताः ॥

(भा. ७/८/८)

राजन्! ब्रह्मा से लेकर तिनके तक, सब छोटे-बड़े चर-अचर जीवों को भगवान् ने ही अपने वश में कर रखा है, न केवल मेरे और आपके, बल्कि संसार के समस्त बलवानों के बल भी केवल वही भगवान् हैं।

किसी मनुष्य के पास कोई शक्ति नहीं हो सकती – न पैसे वाले के पास, न मन्त्रियों के पास। भक्त किसी जीव की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है। बेचारे तुच्छ जीव में क्या बल हो सकता है; वह क्या देश का कल्याण करेगा? हिन्दुस्तान हजारों साल गुलाम रहा फिर भी यहाँ की संस्कृति सुरक्षित रही, यह केवल भगवान् के नाम के प्रभाव से हुआ; संतों ने अवतरित होकर भगवन्नाम के बल से हिन्दुस्तान को बचाया।

अन्ते नारायणस्मृतिः

यह जीवन भगवान् को अर्पण कर दो; भगवान् तो मिले नहीं लेकिन एक भगवान् से भी बड़ी चीज मिल गयी है, वह क्या है? 'भगवान् का नाम'

'कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार ।'

(रा.च.मा.बाल. २३)

इस विश्वास के साथ कीर्तन करना चाहिए कि भगवान् से भी बड़ा उनका नाम है। भगवान् ने तो अपने लीलाकाल में एक ही नारी अहिल्या का उद्धार किया; परन्तु भगवान् के नाम ने आज तक न जाने कितनों का उद्धार किया।

भगवान् ने कृपा करके हमको मनुष्य शरीर दिया, जिससे हम उनके नाम को गाकर इस भयानक भवसागर से पार चले जाएँ; अगर हम मक्खी-मच्छर, गधा, कुत्ता बने होते तो क्या भगवान् का नाम ले सकते थे अर्थात् नहीं ले सकते थे। यह हम पर भगवान् की असीम कृपा है कि हमें मनुष्य बनाया और मनुष्य बनकर भी अगर हम भगवान् का नाम नहीं लेते हैं तो हम गधे-कुत्तों से भी ज्यादा गिरे हुए हैं।

जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ ।
सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ ॥

(रा.च.मा.उत्तर. ४४)

जीवन भर भगवान् का नाम इसीलिए लिया जाता है ताकि अन्तिम समय में भगवान् की याद बनी रहे। अगर मरते समय भगवान् की याद आ जाय तो निश्चित भगवान् मिलते हैं परन्तु अन्तिम समय में भगवान् की याद नहीं आती है, क्यों? क्योंकि हम जीवन भर 'गेहरति' में फँसे रहते हैं। गेहरति क्या है? ये हमारा परिवार, ये हमारी स्त्री, ये हमारे बेटा-बेटी, ये हमारा मकान ....आदि, इससे आदमी कभी नहीं निकल पाता है।

यह गेहरति कब छूटती है –

यः कर्णनाडीं पुरुषस्य यातो भवप्रदां गेहरतिं छिनत्ति ॥

(भा. ३/५/११)

जब भगवान् का नाम, भगवान् की कथा कान में आती है तब यह गेहरति नष्ट होती है और जब संसार में कहीं भी आसक्ति नहीं रहती है तो भवसागर अपने-आप कट जाता है। अगर कहीं जरा-सी भी आसक्ति है तो यह भवसागर कभी नहीं कटता। आसक्ति के कारण ही मरते समय भगवान् की याद नहीं आती। गीता जी में भगवान् ने कहा –

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥

(गी. ८/६)

अन्त समय अर्थात् प्राण छोड़ते समय जो मनुष्य जिस-जिस भाव का चिन्तन करता है, मरने के बाद उसे वहीं जाना पड़ता है। प्रश्न हुआ मरते समय किसका चिन्तन होता है ? इसका उत्तर भगवान् दे रहे हैं 'सदा तद्भाव भावितः' जिसकी सदा (जीवनभर) तुमने भावना की, वही अन्तिम समय में याद आता है; जहाँ जीवनभर तुमने आसक्ति की उसी की याद आती है। इसीलिए मरते समय संसार में अधिकांश लोग कहते हैं – हमारे बेटे को लाओ, हमारी स्त्री को लाओ, एक बार उसका मुँह देख लें; और इसी कारण उनको अधोगति की प्राप्ति होती है।

अगर मनुष्य भगवान् का नाम लेता है तो प्राण छोड़ते समय उसे भगवान् याद आयेंगे। श्रीमद्भागवत में लिखा है –

यस्यावतारगुणकर्मविडम्बनानि नामानि येऽसुविगमे विवशा गृणन्ति ।
ते नैकजन्मशमलं सहसैव हित्वा संयान्त्यपावृतमृतं तमजं प्रपद्ये ॥

(भा. ३/९/१५)

अगर मरते समय किसी भी तरह से विवश होकर भी मन से, वाणी से, शरीर से भगवान् की याद आ जाये अथवा भगवान् का नाम स्मरण आ जाये तो इतने से ही करोंड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं और भगवद्धाम की प्राप्ति होती है।

सबसे बड़ा दाता

नगर-कीर्तन या कीर्तन-फेरी या प्रभात-फेरी का यह स्वरुप है कि संकीर्तन करते हुए इस प्रकार से भ्रमण किया जाए कि जिससे अधिक से अधिक लोग हरि नाम सुनें। जो जीव हरिनाम नहीं ले सकते हैं वे सभी जड़-चेतन योनि के जीव हरिनाम श्रवण से ही प्रभु को प्राप्त हो जाएँ, ऐसा लक्ष्य करके कीर्तन भ्रमण करना ही नगर-कीर्तन है। यह वे ही भक्त कर सकते हैं जिनके हृदय में संसार के प्राणियों के लिए करुणा का सागर लहराता है। केवल अपनी ही मुक्ति की इच्छा रखने वाले मुमुक्षु स्वार्थी हैं। प्रहलाद जी ने नृसिंह भगवान् से यही कहा था कि मैं अकेले मुक्त नहीं होना चाहता हूँ। मुझे स्वार्थी भक्त नहीं बनना है –

नैवोद्विजे पर दुरत्ययवैतरण्या-
स्त्वद्वीर्यगायनमहामृतमग्नचित्तः ।
शोचे ततो विमुखचेतस इन्द्रियार्थ
मायासुखाय भरमुद्वहतो विमूढान् ॥

(भा. ७/९/४३)

हे प्रभो ! इस भव-वैतरणी से पार उतरना दूसरे लोगों के लिए अवश्य ही कठिन है; लेकिन मुझे इसका तनिक भी भय नहीं है, क्योंकि मेरा चित्त निरन्तर आपकी लीला-कथाओं के गान में मग्न रहता है। आपका नाम, आपकी लीलाएँ स्वर्गीय अमृत को भी तिरस्कृत करने वाली परमामृत स्वरुपा हैं। परन्तु मैं उन मूढ़ प्राणियों के लिए शोक कर रहा हूँ, जो आपका नाम नहीं लेते हैं, आपके गुणगान से विमुख रहकर इन्द्रियों के विषयों का मायामय झूठा सुख प्राप्त करने के लिए अपने सिर पर सारे संसार का भार ढोते रहते हैं।

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्तिकामा मौनं चरन्ति विजने न परार्थनिष्ठाः ।
नैतान्विहाय कृपणान्विमुमुक्ष एको नान्यं त्वदस्य शरणं भ्रमतोऽनुपश्ये ॥

(भा. ७/९/४४)

हे मेरे स्वामी ! बड़े-बड़े ऋषि-मुनि तो प्रायः अपनी मुक्ति के लिए निर्जन वन में जाकर मौनव्रत धारण कर लेते हैं, वे दूसरों की भलाई के

लिए कोई विशेष प्रयत्न नहीं करते हैं। परन्तु मेरी दशा तो दूसरी ही हो रही है। मैं इन भूले हुए असहाय गरीबों को छोड़कर अकेला मुक्त नहीं होना चाहता और कोई सहाय भी नहीं दिखाई पड़ता।

ऐसे भक्त भगवान् के विशेष कृपापात्र बन जाते हैं –

स्वयं समुत्तीर्य सुदुस्तरं द्युमन् भवार्णवं भीममदभ्रसौहृदाः ।
भवत्पदाम्भोरुहनावमत्र ते निधाय याताः सदनुग्रहो भवान् ॥

(भा. १०/२/३१)

भगवान् के भक्त ही संसार के निष्कपट प्रेमी, सच्चे हितैषी होते हैं। वे स्वयं तो बड़े कष्ट से पार जाने योग्य भव-सागर को पार कर ही जाते हैं, किन्तु औरों के कल्याण के लिए भी वे यहाँ आपके चरण-कमलों की नौका स्थापित कर जाते हैं। नौका क्या है? भगवन्नाम, भगवल्लीलाओं का गुणगान। ऐसे भक्तों से अधिक प्यारा भक्त भगवान् का और कोई नहीं हो सकता है। गीता जी में स्वयं भगवान् ने कहा है –

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥
न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥

(गी. १८/६८, ६९)

जो मेरा प्रेमी भक्त मेरे इस गीताशास्त्र को मेरे भक्तों में कहेगा; वह निःसन्देह मुझको ही प्राप्त होगा। उससे बढ़कर मेरा प्रिय कार्य करने वाला कोई नहीं है, न ही कोई भविष्य में दूसरा होगा।

अतः जो प्राणियों को भगवन्नाम का दान देता है, वह भगवान् को सबसे ज्यादा प्रिय है।

गोपियों ने भी भागवत में कहा है –

'भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ।'

(भा. १०/३१/९)

संसार का सबसे बड़ा दानी कौन है?

धन-सम्पत्ति, अन्न-वस्त्र देने वाला सबसे बड़ा दानी नहीं है, उससे भी बड़ा दानी वह है जो भगवान् के नाम का, भगवान् की कथाओं का निष्काम भाव से दान करता है।

निष्काम भाव से तात्पर्य है कि कथा-कीर्तन करने के बदले में धन मिले, मान-सम्मान मिले – इन सबको छोड़कर जो चलता है, वह संसार का सबसे बड़ा दाता बन जाता है।

श्रीमद्भागवत जी में भगवन्नाम महिमा

भक्ति महारानी ने नारद जी से पूछा – हे मुनिवर ! यह कलियुग तो महापापी है, इसके आते ही सब धर्म-सत्कर्म नष्ट हो गये हैं, सभी साधनों का सार चला गया है; ऐसे पापी को राजा परीक्षित ने शरण क्यों दी, इसे मारा क्यों नहीं?

नारद जी ने भक्ति महारानी से कहा – हे देवि ! राजा परीक्षित भ्रमर के समान सारग्राही थे; उन्होंने कलियुग को इसलिए नहीं मारा क्योंकि –

यत्फलं नास्ति तपसा न योगेन समाधिना ।
तत्फलं लभते सम्यक्कलौ केशवकीर्तनात् ॥

(भा.माहा. १/६८)

अर्थ – इस कलियुग में जो फल तपस्या करने से नहीं मिलता, योग करने से नहीं मिलता, समाधि लगाने से नहीं मिलता; वह फल भगवान् के नाम-कीर्तन से भलीभाँति मिल जाता है।

शौनक जी ने कहा है –

आपन्नः संसृतिं घोरां यन्नाम विवशो गृणन् ।
ततः सद्यो विमुच्येत यद्बिभेति स्वयं भयम् ॥

(भा. १/१/१४)

अर्थ – भयानक भवबंधन में बंधा जीव यदि विवश होकर भी भगवान् का नाम ले ले तो वह उसी समय विमुक्त हो जाय अर्थात् भगवान् को प्राप्त हो जाय; क्योंकि स्वयं भय भी भगवान् से भयभीत होता है।

कुन्ती जी ने कहा है –

श्रृण्वन्ति गायन्ति गृणन्त्यभीक्ष्णशः
स्मरन्ति नन्दन्ति तवेहितं जनाः ।
त एव पश्यन्त्यचिरेण तावकं
भवप्रवाहोपरमं पदाम्बुजम् ॥

(भा. १/८/३६)

अर्थ – जो भक्तजन भगवान् के गुणों को सुनते हैं, उनका कीर्तन करते हैं, स्मरण करके आनन्दित होते हैं; वे अतिशीघ्र भगवान् के चरणकमलों की प्राप्ति कर लेते हैं और इस जन्म-मृत्यु के प्रवाह से सदा के लिए मुक्त हो जाते हैं।

शौनक जी ने कहा है –

आयुर्हरति वै पुंसामुद्यन्नस्तं च यन्नसौ ।
तस्यर्ते यत्क्षणो नीत उत्तमश्लोकवार्तया ॥

(भा. २/३/१७)

अर्थ – भगवान् के कथा-कीर्तन के गान अथवा श्रवण में जो समय व्यतीत होता है, वही समय सार्थक है। मनुष्यों की उससे अतिरिक्त आयु को सूर्य भगवान् उदय से अस्त तक निश्चय ही समाप्त कर रहे हैं।

तरवः किं न जीवन्ति भस्त्राः किं न श्वसन्त्युत ।
न खादन्ति न मेहन्ति किं ग्रामपशवोऽपरे ॥

(भा. २/३/१८)

अर्थ – जो भगवान् के मंगलमय नामों का कीर्तन नहीं करते हैं, केवल दिन-रात खाने-पीने, भोग-भोगने में ही लगे हुए हैं, उनमें और ग्राम पशुओं (कुत्ते, गधों..आदि) में अन्तर ही क्या है।

क्या वृक्ष नहीं जीते हैं? क्या लुहार की धौंकनी साँस नहीं लेती है? अथवा क्या गाँव के दूसरे पशु नहीं खाते हैं और मल-मूत्र नहीं त्यागते हैं?

श्वविड्वराहोष्ट्रखरैः संस्तुतः पुरुषः पशुः ।
न यत्कर्णपथोपेतो जातु नाम गदाग्रजः ॥

(भा. २/३/१९)

अर्थ – जो कानों से भगवान् के कथा-कीर्तन को नहीं सुनता है, वह मनुष्य होकर भी कुत्ते, गधे, ग्राम सूकर तथा ऊँट आदि पशुओं से भी गया-बीता है। क्योंकि वे तो पशु हैं भगवन्नाम नहीं ले सकते हैं, लेकिन तुम्हें तो भगवान् ने मनुष्य बनाया है।

बिले बतोरुक्रमविक्रमान् ये न शृण्वतः कर्णपुटे नरस्य ।
जिह्वासती दार्दुरिकेव सूत न चोपगायत्युरुगायगाथाः ॥

(भा. २/३/२०)

अर्थ – भगवान् के लीला-चरित्रों को न सुनने वाले लोगों के दोनों कान सर्प के बिल के समान हैं, तथा जिनकी जिह्वा भगवान् श्रीकृष्ण की रसमयी लीलाओं का गान नहीं करती है, वह जीभ मेंढक की जीभ के समान टर्र-टर्र करने वाली मिथ्या है।

मैत्रेय जी ने कहा है –

अशेषसंक्लेशशमं विधत्ते गुणानुवादश्रवणं मुरारेः ॥

(भा. ३/७/१४)

अर्थ – भगवान् के गुणों का गान एवं श्रवण करने से सभी प्रकार के दुःख व कष्ट समूल नष्ट हो जाते हैं।

ब्रह्मा जी ने कहा है –

यस्यावतारगुणकर्मविडम्बनानि
नामानि येऽसुविगमे विवशा गृणन्ति ।
ते नैकजन्मशमलं सहसैव हित्वा
संयान्त्यपावृतमृतं तमजं प्रपद्ये ॥

(भा. ३/९/१५)

अर्थ – अवतार सम्बन्धी नाम – नन्दनन्दन, देवकीनन्दन....आदि। गुण सम्बन्धी नाम – दीनबन्धु, दीनानाथ....आदि। लीला सम्बन्धी

नाम – माखन चोर, गिरिधारी....आदि। जो लोग प्राणत्याग करते समय विवश होकर भी इन नामों का उच्चारण करते हैं, वे अनेक जन्मों के पापों से तत्काल छूटकर माया के आवरण से रहित भगवान् के धाम को प्राप्त कर लेते हैं। मैं उस अजन्मा भगवान् की शरण लेता हूँ।

देवहूति जी ने कपिल भगवान् से कहा है –

यन्नामधेयश्रवणानुकीर्तनाद्
यत्प्रह्वणाद्यत्स्मरणादपि क्वचित् ।
श्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते
कुतः पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात् ॥

(भा. ३/३३/६)

अर्थ – हे प्रभो! आपके नामों (गोविन्द, गोपाल, मधुसूदन, कृष्ण, राम..आदि) को सुनने से, कीर्तन करने से अथवा वन्दन या स्मरण करने से ही कुत्ते के माँस को खाने वाला चाण्डाल भी सोमयाजी ब्राह्मण के समान पूजनीय हो जाता है; फिर जो आपका दर्शन करके कृतकृत्य हो जाय – इसमें तो आश्चर्य ही क्या है।

अहो बत श्वपचोऽतो गरीयान्
यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यम् ।
तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या
ब्रह्मानूचुर्नाम गृणन्ति ये ते ॥

(भा. ३/३३/७)

अर्थ – अरे! वह चाण्डाल भी सर्वश्रेष्ठ है, जो जिह्वा से हर समय भगवान् का नाम लेता रहता है; जो भी श्रेष्ठ पुरुष भगवान् का नाम लेते हैं, उन्होंने तप, हवन, तीर्थस्नान, सदाचार का पालन, वेदाध्यन आदि सब कुछ कर लिया।

यह महापुरुषों ने भी कहा है –

हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविन्द उर धरो ॥
हरि की कथा होय जब जहाँ । गंगा हू चलि आवै तहाँ ॥
गंगा, सिन्धु, सरस्वति आवै । गोदावरी विलम्ब न लावै ॥
सर्वतीर्थ को वासा तहाँ । सूर हरि कथा होवै जहाँ ॥

कोई जरूरत नहीं है किसी तीर्थ में जाने की, जहाँ भगवान् का कथा-कीर्तन होता है वहाँ सभी तीर्थ (प्रयाग, हरिद्वार...आदि); सभी पुण्यदायिनी नदियाँ (गंगा, यमुना, सरस्वती ...आदि) आ जाती हैं। हम लोगों की आस्था नहीं है, अन्यथा बैठकर कृष्ण-कीर्तन करो, बस जितने तीर्थ हैं सबमें स्नान हो गया। जो शुद्ध भाव से कृष्ण-कीर्तन करता है, उसके द्वारा आर्य-मार्ग के सब धर्म पालित हो जाते हैं, सब शौच-सदाचार पालन हो जाते हैं, सब तीर्थों में स्नान हो जाता है, सब तपस्यायें हो जाती हैं।

श्री अजामिल जी की कथा –

(श्रीमद्भागवत में छठवें स्कन्ध के प्रथम अध्याय से तृतीय अध्याय तक)

एक अजामिल नाम का ब्राह्मण था, वह सभी दैवी गुणों से सम्पन्न था। एक बार समिधा लेने के लिए वह वन में गया, वहाँ से लौटते समय उसने एक मदिरा में मत्त भ्रष्ट शूद्र को वेश्या के साथ निर्लज्ज अवस्था में विहार करते हुए देखा; बस क्षण मात्र के कुसंग से उसकी चेतना नष्ट हो गयी और अपने धर्म से विमुख हो गया। घर आकर वह निरन्तर उस वेश्या का चिन्तन करने लगा। कुछ समय बाद वह उस वेश्या को अपने घर ले आया, अपनी विवाहिता पत्नी को छोड़कर उस दुष्टा वेश्या के साथ रमण करने लगा और उस वेश्या से दस पुत्र पैदा हुए, जिसमें सबसे छोटे पुत्र का नाम उसने 'नारायण' रखा। जब अजामिल की मृत्यु का समय आया तो यमदूत उसको लेने के लिये आये क्योंकि उसने पापकर्म किये थे। यमदूत जब उसे ले जाने लगे तो उसने व्याकुल होकर अपने छोटे पुत्र को पुकारा – 'नारायण ! नारायण ! 'उस समय वहाँ से भगवान् के पार्षद

निकल रहे थे; भगवान् नारायण का नाम सुनकर भगवद्पार्षद अजामिल के पास पहुँचे, वहाँ उन्होंने देखा यमदूत बलपूर्वक अजामिल को ले जा रहे हैं।

भगवद्पार्षदों ने उन यमदूतों से कहा – इसको छोड़ दो।

यमदूत – इसने पापकर्म किये हैं, हम इसे धर्मराज की आज्ञा से यमपुरी ले जा रहे हैं।

भगवद्पार्षद बोले – यमदूतो ! लगता है तुम भागवतधर्म से अनभिज्ञ हो, इसने तो अनन्त जन्मों के पापों का प्रायश्चित्त कर लिया –

अयं हि कृतनिर्वेशो जन्मकोट्यंहसामपि ।
यद् व्याजहार विवशो नाम स्वस्त्ययनं हरेः ॥

(भा. ६/२/७)

अर्थ – यमदूतो ! इसने विवश होकर ही सही, अपने पुत्र के बहाने ही सही – जो भगवान् का परम कल्याणमय नाम लिया; इतने से ही इसने करोड़ों जन्मों के पापों का पूरा-पूरा प्रायश्चित्त कर लिया है।

साङ्केत्यं पारिहास्यं वा स्तोभं हेलनमेव वा ।
वैकुण्ठनामग्रहणमशेषाघहरं विदुः ॥

(भा. ६/२/१४)

अर्थ – संकेत में (किसी दूसरे के अभिप्राय से), परिहास में (हँसी-मजाक करते हुए), तान अलापने में अथवा किसी की अवहेलना करते समय भी यदि कोई भगवान् के नामों का उच्चारण करता है, इसी से उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

पतितः स्खलितो भग्नः सन्दष्टस्तप्त आहतः ।
हरिरित्यवशेनाह पुमान्नार्हति यातनाम् ॥

(भा. ६/२/१५)

अर्थ – जो मनुष्य गिरते समय, पैर फिसलते समय, अंग-भंग होते समय, सर्प-बिच्छू आदि के काटते समय, आग में जलते समय तथा चोट लगते समय भी यदि विवशता से भगवान् का नाम लेता है, वह यमयातना का पात्र नहीं रह जाता।

म्रियमाणो हरेर्नाम गृणन् पुत्रोपचारितम् ।
अजामिलोऽप्यगाद्धाम किं पुनः श्रद्धया गृणन् ॥

(भा. ६/२/४९)

अर्थ – मरते समय पुत्र के बहाने भगवान् का नाम लेने से अजामिल को भगवद्धाम की प्राप्ति हुयी; फिर जो श्रद्धा से भगवन्नाम लेते हैं, उनका तो कहना ही क्या।

यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च ।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव वा ॥
सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात् ।
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः ॥

(भा. ६/८/२७, २८)

अर्थ – ग्रहों का भय, दुष्ट मनुष्यों का भय, सर्पादि रेंगने वाले जंतुओं का भय, दाढ़ों वाले हिंसक पशुओं का भय, भूत-प्रेतादि का भय तथा पापी प्राणियों आदि का भय अथवा और भी जितने प्रकार के भय हैं – वे सब भगवान् के नाम, रूप, लीला आदि का कीर्तन करने से तत्काल दूर हो जाते हैं।

ऋषियों ने देवराज इन्द्र से कहा है –

ब्रह्महा पितृहा गोघ्नो मातृहाऽऽचार्यहाघवान् ।
श्वादः पुल्कसको वापि शुद्ध्येरन् यस्य कीर्तनात् ॥

(भा. ६/१३/८)

अर्थ – देवराज ! भगवान् के नाम-कीर्तन मात्र से ही ब्राह्मण, पिता, गौ, माता, आचार्य आदि की हत्या करने वाले महापापी, कुत्ते का माँस खाने वाले चाण्डाल और कसाई भी शुद्ध हो जाते हैं।

हत्या करि विप्र एक, तीरथ करत आयौ,
कहैं मुख 'राम' भिक्षा डारियैं हत्यारे कौं ।
सुनि अभिराम नाम धाम में बुलाय लियौ
दियौ लै प्रसाद कियौ सुद्ध गायौ प्यारे कौं ॥
भई द्विज सभा कहि बोलिकै पठाये आप
कैसे गयौ पाप, संग लैके जेंये, न्यारे कौं ।
पोथीं तुम बांचौ, हिये भाव नहीं साँचौ अजू
ताते मति काँचौ, दूर करै न अंध्यारे कौं ॥५११ ॥

(श्रीभक्तमाल जी छप्पय १२९ कवित्त ५११-५१२ में राम-नाम से ब्रह्महत्यारे की शुद्धि)

अर्थ – एक बार कोई एक ब्राह्मण की हत्या करने वाला व्यक्ति, ब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त करने के लिए तीर्थों में घूमता-फिरता काशी में पहुँचा। वह चिल्लाता जा रहा था, 'राम-राम ! मैं हत्यारा हूँ, मुझे भिक्षा दीजिये।' वहीं समीप में तुलसीदास जी रहते थे। उन्होंने उसके मुख से भगवन्नाम को सुनकर उसे अपनी कुटिया पर बुला लिया और उसे अपने साथ बैठाकर भगवत्प्रसाद पवाया। काशी के ब्राह्मणों ने जब यह बात सुनी तो उन्होंने एक सभा की और उसमें तुलसीदास जी को बुलवाया। और सभी ब्राह्मणों ने उनसे पूछा कि प्रायश्चित्त पूरा हुए बिना इस हत्यारे का पाप कैसे दूर हो गया, अर्थात् नहीं हुआ फिर आपने उस जाति-बहिष्कृत व्यक्ति को साथ बैठाकर भोजन कैसे किया। इस अपराध के कारण आप भी बहिष्कार के योग्य हैं।

तुलसीदास जी ने उत्तर दिया कि आप लोग धर्मग्रन्थों-शास्त्रों को पढ़ते-भर हैं, उसके वास्तविक रहस्य को जानकर विश्वासपूर्वक हृदय में धारण नहीं करते हैं। इसी से आपका मन और मत कच्चा है, वह अज्ञानान्धकार को दूर नहीं कर सकता है।

देखी पोथी बांच, नाम महिमा हूँ कही साँच,
ऐपै हत्या करै कैसे तरे कहि दीजियै ।
'आवै जौ प्रतीति कहौ' कही याके हाथ जेवैं
शिवजू कौ बैल तब पंगति में लीजियै ॥
थार में प्रसाद दियौ चले जहाँ पन कियौ,
बोले 'आप नाम कै प्रसाद मति भीजियै ।
जैसे तुम जानो तैसी कैसे के बखानों अहो,
सुनिके प्रसन्न पायो, जै जै धुनि रीझियै ॥५१२ ॥

अर्थ – काशी के पण्डितों ने कहा – हम लोगों ने पुस्तकों में श्रीराम-नाम की महिमा पढ़कर देखी है, वह सच्ची कही गई है। परन्तु हत्या करने वाला हत्या के पाप से मुक्त हो गया, इसका क्या प्रमाण है। तुलसीदास जी ने कहा – 'आपको कैसे विश्वास होगा सो कहिये।'

तब पण्डितों ने कहा – 'इसके हाथ से यदि शिव जी का नाँदिया कुछ खा ले, तो हम इसे पवित्र मानकर अपना लेंगे।' इस शर्त को तुलसीदास जी ने स्वीकार कर लिया और उसे एक थाल में सजाकर प्रसाद दिया। सभी लोग काशी में ज्ञानवापी के समीप नन्दीश्वर के पास पहुँचे।

तुलसीदास जी ने कहा – हे नन्दीश्वर ! आपकी बुद्धि श्रीराम-नाम के प्रताप-प्रभाव से सर्वदा सरस रहती है। आप भलीभाँति राम-नाम की महिमा को जानते हैं, यदि यह ब्रह्महत्यारा ब्राह्मण राम-नाम के प्रताप से शुद्ध हो गया है तो आप इसके हाथ से प्रसाद स्वीकार करके नाम-महिमा को प्रमाणित कीजिये। ऐसी प्रार्थना सुनकर नन्दीश्वर ने प्रसन्न होकर प्रसाद खा लिया। सभी लोग राम-नाम की ऐसी महिमा देखकर प्रसन्न हो गये और श्री राम-नाम की जय-जयकार की और तुलसीदास जी की नाम-निष्ठा की प्रशंसा की।

सभी यज्ञों की पूर्णता एकमात्र भगवन्नाम से –

राजा बलि ने यज्ञ किया था, उसमें स्वयं भगवान् वामन रूप से पधारे और उन्होंने राजा बलि से तीन पग भूमि की याचना की; राजा बलि ने भूमि देने का संकल्प दे दिया। भगवान् ने अपना स्वरुप बढ़ाया और दो पग में सभी लोकों को नाप लिया। जब तीसरा पग रखने के लिए कोई जगह शेष नहीं रही तो संकल्प पूर्ण न करने के कारण उन्होंने बलि को बंदी बना लिया। तब बलि ने कहा कि आप तीसरा पग हमारे मस्तक पर रखें और हमारा दिया हुआ संकल्प पूर्ण करें। भगवान् ने प्रसन्न होकर बलि का सारा राज्य इन्द्र को दे दिया और बलि को रसातल का राज्य दे दिया। फिर भगवान् ने शुक्राचार्य जी से कहा कि बलि का जो यज्ञ अधूरा रह गया है, आप उसे पूरा करवायें।

शुक्राचार्य जी बोले –

मन्त्रतस्तन्त्रतश्छिद्रं देशकालार्हवस्तुतः ।
सर्वं करोति निश्छिद्रं नामसंकीर्तनं तव ॥

(भा. ८/२३/१६)

अर्थ – हे भगवन्! मन्त्रों की कमी, अनुष्ठान-पद्धति की कमी, देश, काल, पात्र और वस्तु की सारी भूलें आपके नाम-संकीर्तन से सुधर जाती हैं; आपका नाम सारी त्रुटियों को पूर्ण कर देता है।

गोपियों ने कहा है –

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥

(भा. १०/३१/९)

अर्थ – प्यारे श्यामसुन्दर! तुम्हारी लीला-कथा अमृत स्वरुप है, त्रिताप से तपे हुए लोगों का जीवन-सर्वस्व है। ब्रह्मादि कवि भी उसका गान करते हैं। श्रवण मात्र करने से सारे कल्मषों को नष्ट कर देती है व

मंगल करती है। ऐसी उस लीला-कथा का जो गान करते हैं, वे भूरिद हैं अर्थात् पृथ्वी के सबसे बड़े दाता हैं।

भगवान् के नामों को जो जोर-जोर से लेता है, वह सारे संसार को पवित्र करता है –

यन्नाम गृह्णन्नखिलान् श्रोतॄनात्मानमेव च ।
सद्यः पुनाति किं भूयस्तस्य स्पृष्टः पदा हि ते ॥

(भा. १०/३४/१७)

अर्थ – जो पुरुष भगवान् का कीर्तन करता है, वह स्वयं तो पवित्र हो ही जाता है, साथ ही समस्त श्रोताओं को भी पवित्र कर देता है, यहाँ तक कि जो पशु-पक्षी, कीड़े-मकौड़े भी सुनते हैं वे भी पवित्र हो जाते हैं।

योगेश्वर चमस जी ने कहा है –

दूरे हरिकथाः केचिद् दूरे चाच्युतकीर्तनाः ।
स्त्रियः शूद्रादयश्चैव तेऽनुकम्प्या भवादृशाम् ॥

(भा. ११/५/४)

अर्थ – जो लोग समर्थ हैं उन्हें चाहिए कि जो स्त्रियाँ और शूद्र आदि भगवान् की कथा और उनके नाम-कीर्तन आदि से दूर हैं। उन्हें कथा-कीर्तन की सुविधा देकर उनका उद्धार करें।

योगेश्वर करभाजन जी ने कहा है –

कलिं सभाजयन्त्यार्या गुणज्ञाः सारभागिनः ।
यत्र सङ्कीर्तनेनैव सर्वः स्वार्थोऽभिलभ्यते ॥

(भा. ११/५/३६)

अर्थ – कलियुग में केवल संकीर्तन से ही सारे स्वार्थ और परमार्थ बन जाते हैं। इसलिए इस युग का गुण जानने वाले सारग्राही श्रेष्ठ पुरुष कलियुग की बड़ी प्रशंसा करते हैं, इससे बड़ा प्रेम करते हैं।

कृतादिषु प्रजा राजन् कलाविच्छन्ति सम्भवम् ।
कलौ खलु भविष्यन्ति नारायणपरायणाः ॥

(भा. ११/५/३८)

अर्थ – राजन् ! सत्ययुग, त्रेता और द्वापर की प्रजा चाहती है कि हमारा जन्म कलियुग में हो; क्योंकि कलियुग में भगवान् नारायण के शरणागत उन्हीं के आश्रय में रहने वाले बहुत-से भक्त उत्पन्न होंगे।

शुकदेव जी ने कहा है –

कलेर्दोषनिधे राजन्नस्ति ह्येको महान् गुणः ।
कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तसङ्गः परं व्रजेत् ॥

(भा. १२/३/५१)

अर्थ – श्री शुकदेव जी कहते हैं – परीक्षित ! यद्यपि यह कलियुग दोषों का खजाना है, परन्तु फिर भी इसमें एक बहुत बड़ा गुण है। वह गुण यही है कि कलियुग में केवल भगवान् श्रीकृष्ण का संकीर्तन करने मात्र से ही सारी आसक्तियाँ छूट जाती हैं और भगवान् की प्राप्ति हो जाती है।

कलिकृत दोषों से घबराओ नहीं। नाम-कीर्तन से अन्य युगों से भी अधिक सुन्दर गति प्राप्त हो जाएगी –

कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः ।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात् ॥

(भा. १२/३/५२)

अर्थ – सत्ययुग में भगवान् का ध्यान करने से, त्रेता में बड़े-बड़े यज्ञों के द्वारा उनकी आराधना करने से और द्वापर में विधिपूर्वक उनकी पूजा-सेवा से जो फल मिलता है, वह कलियुग में केवल भगवन्नाम का कीर्तन करने से ही प्राप्त हो जाता है।

संसारसिन्धुमतिदुस्तरमुत्तितीर्षो-
र्नान्यः प्लवो भगवतः पुरुषोत्तमस्य ।
लीलाकथारसनिषेवणमन्तरेण
पुंसो भवेद् विविधदुःखदवार्दितस्य ॥

(भा. १२/४/४०)

अर्थ – श्रीशुकदेव जी परीक्षित जी से कहते हैं कि हे राजन ! जो लोग अत्यन्त दुस्तर संसार-सागर से पार जाना चाहते हैं अथवा जो त्रितापों से जल रहे हैं, उनके लिए संसार-सागर व दुःख दावाग्नि से मुक्त होने का

भगवान् की लीला-कथाओं के सेवन के अतिरिक्त और कोई साधन नहीं है।

श्रीमद्भागवत का अन्तिम सार यही है –

नामसङ्कीर्तनं यस्य सर्वपापप्रणाशनम् ।
प्रणामो दुःखशमनस्तं नमामि हरिं परम् ॥

(भा. १२/१३/२३)

अर्थ – जिन भगवान् का नाम-संकीर्तन सारे पापों को सर्वथा नष्ट कर देता है और जिन भगवान् के चरणों में आत्मसमर्पण, प्रणति सर्वदा के लिए सब प्रकार के दुःखों को शान्त कर देती है, उन्हीं परमतत्त्वस्वरुप श्रीहरि भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्रीरामचरितमानस जी में भगवन्नाम महिमा

मंगल भवन अमंगल हारी ।
उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥

अर्थ – भगवान् का नाम कल्याण का भवन है और अमंगलों को हरने वाला है, जिसे पार्वती जी सहित भगवान् शिव जी सदा जपा करते हैं।

नाम प्रभाउ जान सिव नीको ।
कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥

अर्थ – नाम के प्रभाव को श्री शिवजी भलीभाँति जानते हैं, जिस (प्रभाव) के कारण कालकूट जहर ने उनको अमृत का फल दिया।

समुद्र मन्थन से उत्पन्न कालकूट सारी सृष्टि का विनाश करने लगा। तब देवगण शिवजी के पास गये और शिवजी ने संसार की रक्षा के लिए सर्वतोव्याप्त कालकूट को हथेली पर रखकर पी लिया। जैसा कि नन्दी पुराण में नन्दीश्वर के वचन हैं –

श्रृणुध्वं भो गणाः सर्वे राम नाम परं बलम् ।
यत्प्रसादान्महादेवो हालाहलमयीं पिबेत् ॥

हे गणो ! श्री राम-नाम की महा-महिमा सुनो, जिसके प्रभाव से शिव जी ने हलाहल विष भी पान कर लिया।

वस्तुतः कालकूट क्या है? यह ऐसा विष है जिसका सृष्टि में सर्वत्र प्रभाव पड़ता है। छठे मन्वन्तर में भगवान् अजित नाम धारण करके प्रगट हुये। देवासुर संग्राम हुआ था। दुर्वासा जी को विष्णु भगवान् ने माला प्रसाद दिया था। उन्होंने इन्द्र को दिया जो ऐरावत पर चढ़कर रणभूमि की ओर जा रहे थे। इन्द्र ने ऐरावत के मस्तक पर माला डाल दी। ऐरावत ने माला पैरों के नीचे कुचल दी। दुर्वासा जी ने शाप दिया कि तुम श्रीभ्रष्ट हो जाओ। संग्राम में तीनों लोक श्रीहीन हो गए। यज्ञादि धर्म-कर्म बंद हो गए। त्रिलोकी सारहीन हो गई। यह सब कालकूट ही था। समाज में जो भी सामाजिक दोष हैं – जैसे विषमता, दारिद्र, शोषण, उत्पीडन आदि;

राजनीति में जो भी राजनैतिक दोष हैं – भ्रष्टाचार, अन्याय, कुशासन, अराजकता आदि; धर्म में जो कुछ धार्मिक दोष हैं –विघटन, राष्ट्रभावनाहीनता, विद्रोह, कुचक्र, आतंकवाद आदि। इसी प्रकार अनेक-अनेक प्रकार के दोषों से संसार सारहीन हो जाता है अर्थात् श्री चली जाती है। यह है कालकूट विष – जिसके नष्ट होने के बाद अमृत की उत्पत्ति होती है। जब तक विष का नाश नहीं होता है तब तक अमृत उत्पन्न नहीं होता है। यही समुद्र मंथन में हुआ। आज भी ये सब राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक विष जो संसार में चारों ओर फैल रहे हैं, इनका नाश केवल भगवन्नाम से ही हो सकता है। यही इस चौपाई का अर्थ है। यही शंकर जी ने करके दिखाया – नाम के प्रभाव से कालकूट को अमृतफलदाता बना दिया। यह नाम की महिमा वही जानते हैं। इसीलिए 'जान शिव नीको' कहा गया। आज का प्राणी इस रहस्य को नहीं जानता है। यदि भगवन्नाम प्रयोग किया जाए तो आज भी संसार में सारे विष अमृत हो जायेंगे।

समुझत सरिस नाम अरु नामी ।
प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥

अर्थ – समझने में नाम और नामी दोनों एक-से हैं, किन्तु दोनों में परस्पर स्वामी और सेवक के समान प्रीति है (अर्थात् नाम और नामी में पूर्ण एकता होने पर भी जैसे स्वामी के पीछे सेवक चलता है, उसी प्रकार नाम के पीछे नामी चलते हैं। प्रभु श्री रामजी अपने 'राम' नाम का ही अनुगमन करते हैं (नाम लेते ही वहाँ आ जाते हैं)।

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार ।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर ॥

अर्थ – तुलसीदासजी कहते हैं, यदि तू भीतर और बाहर दोनों ओर उजाला चाहता है, तो मुख रूपी द्वार की जीभ रूपी देहली पर रामनाम रूपी मणि-दीपक को रख।

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी ।
बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी॥
ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा ।
अकथ अनामय नाम न रूपा ॥

अर्थ – ब्रह्मा के बनाए हुए इस प्रपंच (दृश्य जगत) से भलीभाँति छूटे हुए वैराग्यवान् मुक्त योगी पुरुष इस नाम को ही जीभ से जपते हुए (तत्व ज्ञान रूपी दिन में) जागते हैं और नाम तथा रूप से रहित अनुपम, अनिर्वचनीय, अनामय ब्रह्मसुख का अनुभव करते हैं।

जपहिं नामु जन आरत भारी ।
मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥

अर्थ – (संकट से घबड़ाए हुए) आर्त भक्त नाम जप करते हैं, तो उनके बड़े भारी बुरे-बुरे संकट मिट जाते हैं और वे सुखी हो जाते हैं।

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा ।
अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥
मोरें मत बड़ नामु दुहू तें ।
किए जेहिं जुग नज बस निज बूतें ॥

अर्थ – निर्गुण और सगुण ब्रह्म के दो स्वरूप हैं। ये दोनों ही अकथनीय, अथाह, अनादि और अनुपम हैं। मेरी सम्मति में नाम इन दोनों से बड़ा है, जिसने अपने बल से दोनों को अपने वश में कर रखा है।

निरगुन तें एहि भाँति बड़ नाम प्रभाउ अपार।
कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार ॥

अर्थ – इस प्रकार निर्गुण से नाम का प्रभाव अत्यंत बड़ा है। अब अपने विचार के अनुसार कहता हूँ, कि नाम (सगुण) राम से भी बड़ा है।

राम एक तापस तिय तारी ।
नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥

अर्थ – श्री रामजी ने एक तपस्वी की स्त्री (अहिल्या) को ही तारा, परन्तु नाम ने करोड़ों दुष्टों की बिगड़ी बुद्धि को सुधार दिया।

सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ ।
नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ ॥

अर्थ – श्री रघुनाथजी ने तो शबरी, जटायु आदि उत्तम सेवकों को ही मुक्ति दी, परन्तु नाम ने अगनित दुष्टों का उद्धार किया। नाम के गुणों की कथा वेदों में प्रसिद्ध है।

राम भालु कपि कटुक बटोरा ।
सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा ॥
नामु लेत भवसिन्धु सुखाहीं ।
करहु बिचारु सुजन मन माहीं ॥

अर्थ – श्री रामजी ने तो भालू और बंदरों की सेना बटोरी और समुद्र पर पुल बाँधने के लिए थोड़ा परिश्रम नहीं किया, परन्तु नाम लेते ही संसार समुद्र सूख जाता है। सज्जनगण ! मन में विचार कीजिए (कि दोनों में कौन बड़ा है)।

ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि ।
रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि ॥

अर्थ – इस प्रकार नाम (निर्गुण) ब्रह्म और (सगुण) राम दोनों से बड़ा है। यह वरदान देने वालों को भी वर देने वाला है। श्री शिवजी ने अपने हृदय में यह जानकर ही सौ करोड़ राम चरित्र में से इस 'राम' नाम को (साररूप से चुनकर) ग्रहण किया है।

सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी ।
नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी ॥

अर्थ – शुकदेवजी और सनकादि सिद्ध, मुनि, योगी गण नाम के ही प्रसाद से ब्रह्मानन्द को भोगते हैं।

अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ ।
भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ ॥
कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई ।
रामु न सकहिं नाम गुन गाई ॥

अर्थ – नीच अजामिल, गज और गणिका (वेश्या) भी श्री हरि के नाम के प्रभाव से मुक्त हो गए। मैं नाम की बड़ाई कहाँ तक कहूँ, राम भी नाम के गुणों को नहीं गा सकते।

नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु ।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु ॥

अर्थ – कलियुग में राम का नाम कल्पतरु (मन चाहा पदार्थ देने वाला) और कल्याण का निवास (मुक्ति का घर) है, जिसको स्मरण करने से भाँग सा (निकृष्ट) तुलसीदास तुलसी के समान (पवित्र) हो गया।

नाम कामतरु काल कराला ।
सुमिरत समन सकल जग जाला ॥
राम नाम कलि अभिमत दाता ।
हित परलोक लोक पितु माता ॥

अर्थ – ऐसे कराल (कलियुग के) काल में तो नाम ही कल्पवृक्ष है, जो स्मरण करते ही संसार के सब जंजालों को नाश कर देने वाला है। कलियुग में यह राम नाम मनोवांछित फल देने वाला है, परलोक का परम हितैषी और इस लोक का माता-पिता है (अर्थात परलोक में भगवान् का परमधाम देता है और इस लोक में माता-पिता के समान सब प्रकार से पालन और रक्षण करता है)।

नहिं कलि करम न भगति बिबेकू ।
राम नाम अवलंबन एकू ॥
कालनेमि कलि कपट निधानू ।
नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥

अर्थ – कलियुग में न कर्म है, न भक्ति है और न ज्ञान ही है, राम नाम ही एक आधार है। कपट की खान कलियुग रूपी कालनेमि के (मारने के) लिए राम नाम ही बुद्धिमान और समर्थ श्री हनुमान्‌जी हैं।

राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल ।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल ॥

अर्थ – राम नाम श्री नृसिंह भगवान् है, कलियुग हिरण्यकशिपु है और जप करने वाले जन प्रह्लाद के समान हैं, यह राम नाम देवताओं के शत्रु (कलियुग रूपी दैत्य) को मारकर नाम लेने वालों की रक्षा करेगा।

भायँ कुभायँ अनख आलस हूँ ।
नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ॥

(रा.च.मा.बाल. दोहा १९ से २८ तक)

अर्थ – अच्छे भाव (प्रेम) से, बुरे भाव (बैर) से, क्रोध से या आलस्य से, किसी तरह से भी नाम जपने से दसों दिशाओं में कल्याण होता है।

शिव जी ने पार्वती जी से कहा है –

जिन्ह हरि कथा सुनी नहिं काना ।
श्रवन रंध्र अहिभवन समाना ॥
नयनन्हि संत दरस नहिं देखा ।
लोचन मोरपंख कर लेखा ॥
ते सिर कटु तुंबरि समतूला ।
जे न नमत हरि गुर पद मूला ॥

अर्थ – जो कानों से भगवान् की कथा नहीं सुनता है, उसके कान साँप के बिल के समान हैं।

जिसने नेत्रों से भगवान् व भक्तों के दर्शन नहीं किए, उनके नेत्र मोर के पंखों पर दिखने वाली नकली आँखों के समान हैं।

जिन लोगों के सिर भगवान् और संतों के चरणों में नहीं झुकते हैं, उनके सिर कड़वी तूँबी के समान हैं।

जिन्ह हरिभगति हृदयँ नहिं आनी ।
जीवत सव समान तेइ प्रानी ॥
जो नहिं करइ राम गुन गाना ।
जीह सो दादुर जीह समाना ॥
कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती ।
सुनि हरिचरित न जो हरषाती ॥

(रा.च.मा.बाल. ११३)

जिनके हृदय में भगवान् की भक्ति नहीं आयी, वे प्राणी जीते हुए ही मुर्दे के समान हैं।

जो जीभ श्री रामचन्द्रजी के गुणों का गान नहीं करती, वह मेंढक की जीभ के समान है।

वह हृदय वज्र के समान कड़ा और निष्ठुर है, जो भगवान् के चरित्र सुनकर हर्षित नहीं होता।

बिबसहुँ जासु नाम नर कहहीं ।
जनम अनेक रचित अघ दहहीं ॥
सादर सुमिरन जे नर करहीं ।
भव बारिधि गोपद इव तरहीं ॥

(रा.च.मा.बाल. ११८)

अर्थ – विवश होकर भी जो भगवान् का नाम लेते हैं, ऐसे लोगों के भी अनेक जन्मों में किये हुए पाप उसी समय जल जाते हैं। फिर जो मनुष्य आदरपूर्वक श्रद्धा से उनका स्मरण करते हैं, वे तो भवसागर को गाय के खुर से बने हुए गड्ढे के समान (अर्थात् बिना किसी परिश्रम के) पार कर जाते हैं।

जासु नाम सुमरत एक बारा ।
उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥

(रा.च.मा.अयो. १०१)

अर्थ – एक बार जिनका नाम स्मरण करते ही मनुष्य अपार भवसागर के पार उतर जाते हैं।

राम राम कहि जे जमुहाहीं ।
तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं ॥

(रा.च.मा.अयो. १९४)

अर्थ – जो लोग राम-राम कहकर जँभाई लेते हैं (अर्थात आलस्य से भी जिनके मुँह से राम-नाम निकलता है), पापों के समूह (कोई भी पाप) उनके सामने नहीं आते।

उलटा नामु जपत जगु जाना । बालमीकि भए ब्रह्म समाना ॥

अर्थ – जगत जानता है कि उलटा नाम (मरा-मरा) जपते-जपते वाल्मीकिजी ब्रह्म के समान हो गए।

स्वपच सबर खस जमन जड़ पावँर कोल किरात ।
रामु कहत पावन परम होत भुवन बिख्यात ॥

(रा.च.मा.अयो. १९४)

अर्थ – मूर्ख और पामर चाण्डाल, शबर, खस, यवन, कोल और किरात भी राम-नाम कहते ही परम पवित्र और त्रिभुवन में विख्यात हो जाते हैं।

बारक राम कहत जग जेऊ ।
होत तरन तारन नर तेऊ ॥

(रा.च.मा.अयो. २१७)

अर्थ – जगत् में जो भी मनुष्य एक बार 'राम' कह लेते हैं, वे भी तरने-तारने वाले हो जाते हैं।

जासु नाम पावक अघ तूला ।
सुमिरत सकल सुमंगल मूला ॥

(रा.च.मा.अयो. २४८)

अर्थ – जिनका नाम पापरूपी रूई के (तुरन्त जला डालने के) लिए अग्नि है; और जिनका स्मरण मात्र समस्त शुभ मंगलों का मूल है।

भरत जी ने कहा है –

सो सुखु करमु धरमु जरि जाऊ ।
जहँ न राम पद पंकज भाऊ ॥
जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानू ।
जहँ नहिं राम पेम परधानू ॥

(रा.च.मा.अयो. २९१)

अर्थ – जहाँ श्रीराम जी के चरण कमलों में प्रेम नहीं है, वह सुख, कर्म और धर्म जल जाए। जिसमें श्रीराम-प्रेम की प्रधानता नहीं है, वह योग कुयोग है और वह ज्ञान अज्ञान है।

कठिन काल मल कोस धर्म न ग्यान न जोग जप ।
परिहरि सकल भरोस रामहि भजहिं ते चतुर नर ॥

(रा.च.मा.अरण्य. ६)

अर्थ – यह कठिन कलिकाल पापों का खजाना है, इसमें न धर्म है, न ज्ञान है और न योग तथा जप ही है। इसमें तो जो लोग सब भरोसों को छोड़कर श्री रामजी को ही भजते हैं, वे ही चतुर हैं।

जटायु ने कहा है –

जा कर नाम मरत मुख आवा ।
अधमउ मुकुत होई श्रुति गावा ॥
सो मम लोचन गोचर आगें ।
राखौं देह नाथ केहि खाँगें ॥

(रा.च.मा.अरण्य. ३१)

अर्थ – मरते समय जिनका नाम मुख में आ जाने से अधम (महान् पापी) भी मुक्त हो जाता है, ऐसा वेद गाते हैं। वही (आप) मेरे नेत्रों के विषय होकर सामने खड़े हैं। हे नाथ ! अब मैं किस कमी (की पूर्ति) के लिए देह को रखूँ?

रावनारि जसु पावन गावहिं सुनहिं जे लोग ।
राम भगति दृढ़ पावहिं बिनु बिराग जप जोग ॥

(रा.च.मा.अरण्य. ४६)

अर्थ – जो लोग रावण के शत्रु श्री रामजी का पवित्र यश गावेंगे और सुनेंगे, वे वैराग्य, जप और योग के बिना ही श्री रामजी की दृढ़ भक्ति पावेंगे।

सुग्रीव जी ने कहा है –

देह धरे कर यह फलु भाई ।
भजिअ राम सब काम बिहाई ॥

(रा.च.मा.किष्कि. २३)

अर्थ – हे भाई ! देह धारण करने का यही फल है कि सब कामनाओं को छोड़कर श्री रामजी का भजन ही किया जाए।

पापिउ जा कर नाम सुमिरहीं ।
अति अपार भवसागर तरहीं ॥

(रा.च.मा.किष्कि. २९)

अर्थ – पापी भी जिनका नाम स्मरण करके अत्यन्त अपार भवसागर से तर जाते हैं।

जासु नाम जपि सुनहु भवानी ।
भव बंधन काटहिं नर ग्यानी ॥

(रा.च.मा.सुन्द. २०)

अर्थ – शिव जी कहते हैं – हे भवानी ! सुनो, जिनका नाम जपकर ज्ञानी (विवेकी) मनुष्य संसार (जन्म-मरण) के बन्धन को काट डालते हैं।

हनुमान जी ने रावण से कहा है –

राम नाम बिनु गिरा न सोहा ।
देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥
बसन हीन नहिं सोह सुरारी ।
सब भूषन भूषित बर नारी ॥

(रा.च.मा.सुन्द. २३)

अर्थ – हे रावण ! तू अपने मनमें विचार करके मद और मोहको त्यागकर अच्छी तरह जांच ले कि राम के नाम बिना वाणी कभी शोभा नहीं देती।

हे रावण ! चाहे स्त्री सब अलंकारों से अलंकृत और सुन्दर क्यों न होवे परंतु वस्त्र के बिना वह कभी शोभायमान नहीं होती। ऐसे ही राम नाम बिना वाणी शोभायमान नहीं होती।

जामवन्त जी ने कहा है –

सुनहु भानुकुल केतु जामवंत कर जोरि कह ।
नाथ नाम तव सेतु नर चढ़ि भव सागर तरहिं ॥

(रा.च.मा.लंका. १)

अर्थ – हे सूर्यकुल के ध्वजास्वरूप (कीर्ति को बढ़ाने वाले) श्री रामजी ! सुनिए – हे नाथ ! सबसे बड़ा सेतु तो आपका नाम ही है, जिस पर चढ़कर (जिसका आश्रय लेकर) मनुष्य संसार रूपी समुद्र से पार हो जाते हैं।

तब लगि कुसल न जीव कहुँ सपनेहुँ मन बिश्राम ।
जब लगि भजत न राम कहुँ सोक धाम तजि काम ॥

(रा.च.मा.सुन्द. ४६)

अर्थ – जब तक यह जीव शोक के घर काम (इच्छाओं) को त्यागकर श्रीरामजी को नहीं भजता, तब तक उसके लिये न तो कुशल है और न स्वप्न में भी उसके मन को शान्ति मिलती है।

बेद पुरान जासु जसु गायो ।
राम बिमुख काहुँ न सुख पायो ॥

(रा.च.मा.लंका. ४८)

अर्थ – वेद-पुराणों ने जिनका यश गाया है, उन श्री राम से विमुख होकर किसी ने सुख नहीं पाया।

जे ग्यान मान बिमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी ।
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ॥
बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे ।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो समरामहे ॥

(रा.च.मा.उत्तर. १३)

अर्थ – जिन्होंने मिथ्या ज्ञान के अभिमान में विशेष रूप से मतवाले होकर जन्म-मृत्यु (के भय) को हरने वाली आपकी भक्ति का आदर नहीं किया, हे हरि ! उन्हें देव-दुर्लभ (देवताओं को भी बड़ी कठिनता से प्राप्त होने वाले, ब्रह्मा आदि के) पद को पाकर भी हम उस पद से नीचे गिरते देखते हैं (परन्तु), जो सब आशाओं को छोड़कर आप पर विश्वास करके आपके दास हो रहते हैं, वे केवल आपका नाम ही जपकर बिना ही परिश्रम भवसागर से तर जाते हैं। हे नाथ ! ऐसे आपका हम स्मरण करते हैं।

भगति हीन गुन सब सुख ऐसे ।
लवन बिना बहु बिंजन जैसे ॥
भजन हीन सुख कवने काजा ।
अस बिचारि बोलेउँ खगराजा ॥

(रा.च.मा.उत्तर. ८४)

अर्थ – भक्ति से रहित सब गुण और सब सुख वैसे ही (फीके) हैं जैसे नमक के बिना बहुत प्रकार के भोजन के पदार्थ। भजन से रहित सुख किस काम के?

कागभुशुण्डि जी गरुड़ जी से कहते है –

सुनु ब्यालारि काल कलि मल अवगुन आगार ।
गुनउँ बहुत कलिजुग कर बिनु प्रयास निस्तार ॥
कृतजुग त्रेता द्वापर पूजा मख अरु जोग ।
जो गति होइ सो कलि हरि नाम ते पावहिं लोग ॥

(रा.च.मा.उत्तर. १०२)

अर्थ – कलियुग में अनेकों बुराइयाँ हैं, कहाँ तक कहूँ, पर मेरे भाई ! इस युग में एक अच्छी बात भी है। गरुड़ जी ने कहा भला कलियुग में ऐसा

अच्छा गुण क्या है? कागभुशुण्डि जी ने कहा कि जो गति अन्य युगों में बड़े-बड़े कर्मों, यज्ञों, तपों, व्रतों आदि के करने से नहीं मिलती है वो कलियुग में सिर्फ नाम-संकीर्तन से ही मिल जाती है। यही इसमें महान गुण है।

कलिजुग केवल हरि गुन गाहा ।
गावत नर पावहिं भव थाहा ॥

अर्थ – कलियुग में तो केवल श्री हरि की गुणगाथाओं का गान करने से ही मनुष्य भवसागर की थाह पा जाते हैं।

कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना ।
एक अधार राम गुन गाना ॥
सब भरोस तजि जो भज रामहि ।
प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहि ॥

अर्थ – कलियुग में न तो योग और यज्ञ है और न ज्ञान ही है। रामजी का गुणगान ही एकमात्र आधार है। अतएव सारे भरोसे त्यागकर जो श्री रामजी को भजता है और प्रेमसहित उनके गुणसमूहों को गाता है।

सोइ भव तर कछु संसय नाहीं ।
नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं ॥
कलि कर एक पुनीत प्रतापा ।
मानस पुन्य होहिं नहिं पापा ॥

अर्थ – वही भवसागर से तर जाता है, इसमें कुछ भी संदेह नहीं। नाम का प्रताप कलियुग में प्रत्यक्ष है। कलियुग का एक पवित्र प्रताप (महिमा) है कि मानसिक पुण्य तो होते हैं, पर मानसिक पाप नहीं होते।

कलिजुग सम जुग आन नहिं जौं नर कर बिस्वास ।
गाइ राम गुन गन बिमल भव तर बिनहिं प्रयास॥

(रा.च.मा.उत्तर. १०३)

अर्थ – हमको यह विश्वास करना चाहिए कि कलियुग के समान दूसरा युग नहीं है, क्योंकि इस युग में भगवान् के गुणों को गा-गाकर मनुष्य बिना परिश्रम के ही भवसागर से तर जाता है।

एहिं कलिकाल न साधन दूजा ।
जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा ॥
रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि ।
संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि ॥

(रा.च.मा.उत्तर. १३०)

अर्थ – इस कलियुग में कोई साधन नहीं है – न योग, न यज्ञ, न जप, न तप, न व्रत और न पूजन। फिर भगवान् कैसे मिलेंगे? बस, भगवान् का स्मरण करो, भगवान् के नाम का कीर्तन करो और सतत् भगवान् की कथाओं को सुनो। बिना मेहनत के भगवान् मिल जायेंगे।

श्रीरामचरितमानस जी का भी यही अन्तिम सार है –

पाई न केहिं गति पतित पावन राम भजि सुनु सठ मना ।
गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि खल तारे घना ॥
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे ।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते ॥

(रा.च.मा.उत्तर. १३०)

अर्थ – रे पगले मन सुन, पतितों को भी पवित्र करने वाले श्रीरामजी को भजकर किसने परम गति नहीं पाई? श्रीरामजी ने गणिका, अजामिल, गीध आदि अनेकों दुष्टों को तार दिया। यवन, किरात, चाण्डाल आदि भी एक बार उनका नाम लेकर पवित्र हो जाते हैं।

चैतन्यचरितामृत में भगवन्नाम महिमा

चैतन्य महाप्रभु जो स्वयं श्रीकृष्ण थे, अपने परिकर के साथ कृष्ण-नाम की भिक्षा माँगते थे। अर्थात् भगवन्नाम उच्चारण करवाते थे। नित्यानन्द महाप्रभु और हरिदास ठाकुर आदि नगर कीर्तन के पीछे घायल हुए। हरिदास ठाकुर २२ बाजारों में पिटते रहे किन्तु जीवों के कल्याण के लिए कीर्तन की फेरी करते रहे ....

पशु-पक्षी-कीट आदि बलिते ना पारे।
शुनिलेइ हरिनाम तारा सब तरे॥
जपिले से कृष्णनाम आपनिसे तरे।
उच्च संकीर्तने परोपकारे॥

कीड़े-मकौड़े, मक्खी-मच्छर, अनन्त जीवाणु जो हरिनाम नहीं ले सकते, उनका भी कल्याण हो जाता है हरिनाम सुनने से। हरिनाम की शक्ति अमोघ है। वह जड़ वस्तुओं को भी पवित्र करती है।

नामाभासे मुक्ति हय सर्वशास्त्र देखि।
श्री भागवते ताहाँ अजामिल साक्षी॥
शुनिया प्रभुर सुख बाढ़ये अन्तरे।
पुनरपि भंगी करि पुछये ताहारे॥
पृथिवी ते बहु जीव स्थावर-जंगम।
इहा सभार कि प्रकारे हइवे मोचन?
हरिदास कहे-प्रभु! से कृपा तोमार।
स्थावर-जंगमेर प्रथम करियाछ निस्तार॥
तुमि जेइ करयाछ उच्च संकीर्तन।
स्थावर-जंगमेर सेइ हृयन्त श्रवण॥
शुनितेइ जंगमेर हय संसार क्षय।
स्थावर से शब्द लागे, ताते प्रति ध्वनि हय॥
प्रतिध्वनि नहे, सेइ करये कीर्तन।
तोमार क पाय एइ अकथ्य-कथन॥
सकल जगते हय उच्च संकीर्तन।

शुनि प्रेमावेशेनाचे स्थावर-जंगम ॥

(चैतन्य चरितामृत/अन्त्यलीला/संख्या ६०-६७)

अर्थ – सर्व शास्त्र कहते हैं कि नामाभास से मुक्ति होती है, श्रीमद्भागवत में अजामिल इस बात का साक्षी है। श्री हरिदास के वचन सुनकर श्री महाप्रभु जी को आनन्द हो रहा था, फिर भी जानबूझकर श्री हरिदास से पूछने लगे – 'हरिदास ! जो जीव नाम उच्चारण कर सकते हैं, उनका तो नाम उच्चारण से या नामाभास से निस्तार हो जायेगा – यह सत्य है किन्तु पृथ्वी पर स्थावर-जंगम दोनों प्रकार के अनेक जीव हैं उन सबका अर्थात् स्थावरों का, वृक्षादि का कैसे मोचन होगा? श्री हरिदास जी ने कहा – प्रभो ! आपकी करुणा ने तो स्थावर जंगम दोनों प्रकार के जीवों का पहले ही निस्तार कर दिया है। आप जो उच्च ध्वनि से श्रीनाम-संकीर्तन करते हैं, उसे स्थावर एवं जंगम दोनों ही श्रवण करते हैं। जंगम जो मनुष्य, पशु-पक्षी हैं उसको सुनते ही उनका संसार बंधन टूट जाता है और स्थावर वृक्षादिकों के साथ जाकर जब वह संकीर्तन ध्वनि टकराती है तो उससे भी प्रति ध्वनि निकला करती है।

श्री हरिदास ने कहा – प्रभो ! वह वास्तव में प्रतिध्वनि नहीं है वही वे कीर्तन करते हैं। आपकी कृपा से ही यह अकथ्य कथन होता है अर्थात् न कथन कर सकने वाले स्थावर जीव भी नाम का कथन करते हैं। समस्त जगत् में उच्चस्वर से नाम-संकीर्तन होता है, उसे सुनकर स्थावर जंगम प्रेमावेश में नृत्य करने लगते थे।

येइ 'नाम' सेइ 'कृष्ण' भजे निष्ठा करि ।
नामेर सहित आछेन आपनि श्रीहरि ॥
सुन सुन ओरे भाई नाम-संकीर्तन ।
ये नाम श्रवणे हय पाप विमोचन ॥
'कृष्ण' नाम 'हरि' नाम बड़इ मधुर ।
येइ जन कृष्ण भजे-से बड़ चतुर ॥

सहस आस्य उपदेस करि जगत उद्धरन जतन कियो ॥
गोपुर है आरूढ़ उच्च स्वर मंत्र उचार्यो ।
सूते नर परे जागि बहत्तरि श्रवननि धार्यो ॥
तितनेई गुरुदेव पधति भई न्यारी न्यारी ।
कुर तारक सिष प्रथम भक्ति बपु मंगलकारी ॥
कृपनपाल करुणा समुद्र रामानुज सम नहीं बियो ।
सहस आस्य उपदेस करि जगत उद्धरन जतन कियो ॥

(श्रीभक्तमाल जी छप्पय – ३१ श्रीरामानुज स्वामी जी की कथा)

अर्थ – श्री रामानुज स्वामी अपने गुप्त गुरु मंत्र को गुरुजी के मना करने पर भी ऊपर गोपुर पर चढ़ करके उच्चारण करने लगे। गुरुदेव ने कहा तुमने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया है अतः तुम्हें नरक होगा। उन्होंने कहा मुझे नरक जाना स्वीकार है यदि जीवों का कल्याण हो तो। उनकी इस जीव दया को देखकर उनके गुरू गोष्ठीपूर्ण जी ने उन्हें हृदय से लगा लिया और कहा कि जिसके हृदय में प्राणियों के प्रति इतनी दया है वे नरक में नहीं जा सकते हैं। तुम मेरे शिष्य नहीं मेरे नाथ हो, मेरे स्वामी हो, मेरे गुरू हो। उन्होंने मन्नाथ-मन्नाथ कहकर हृदय से लगा लिया। उस दिन नृसिंह चतुर्दशी थी। नाम श्रवण से ७२ व्यक्तियों को उसी समय सिद्धि प्राप्त हो गई।

अन्य ग्रन्थों में भगवन्नाम महिमा

नामैकं यस्य वाचि स्मरणपथगतं श्रोत्रमूलंगतं वा
शुद्धं वाशुद्धवर्णं व्यवहितरहितं तारयत्येव सत्यम् ।
तच्चेद्देह – द्रविणजनता - लोभ - पाखण्ड - मध्ये
निक्षिप्तं स्यान्न फलजनकं शीघ्रमेवात्र विप्र ॥

(पद्मपुराण)

अर्थ – भगवान् का एक नाम भी जिसकी जिह्वा पर आ जाय, स्मरण में आ जाय या कान में प्रवेश कर जाय; वह चाहे शुद्ध हो या अशुद्ध, निश्चय उद्धार कर देगा। लेकिन प्रायः लोग देह सुख के लिए, धन के लिए, मान-सम्मान के लिए, लोभ के कारण अथवा पाखण्ड से नाम लेते हैं इसलिए उसका शीघ्र फल नहीं मिल पाता है।

पद्मपुराण में स्पष्ट घोषणा की गयी है –

गोकोटि दानं ग्रहणेषु काशी माघे प्रयागे यदि कल्पवासी ।
यज्ञायुतं मेरुसुवर्ण दानं गोविन्द नाम्ना न भवेच्च तुल्यम् ॥

अर्थ – ग्रहण काल में काशी में करोड़ों गायों का दान दिया जाय, जो कि असम्भव है किन्तु सम्भव भी मान लें तब भी वह **गोविन्द** के एक नाम के दान के बराबर नहीं है। इसी तरह माघ महीने में प्रयाग में कल्पवास किया जाय, हजारों यज्ञ किये जाएँ तथा सुमेरु पर्वत के बराबर स्वर्ण का दान दिया जाय – ये सब मिलकर भी श्रीभगवान् के एक नाम के दान के बराबर नहीं हो सकते हैं।

अतः ऐसा अनन्त पुण्य बिना परिश्रम के, बिना पैसा खर्च किए सभी लोग लूटें और भगवन्नाम का दान देकर विश्व का कल्याण करें।

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

(पद्म.उत्तर.९४/२३)

अर्थ – भगवान् ने कहा – हे नारद ! मैं वैकुण्ठ में नहीं रहता हूँ और न ही योगियों के हृदय में रहता हूँ। जहाँ मेरे भक्त मेरे नाम का कीर्तन करते हैं मैं वहीं रहता हूँ।

सुगमं भगवन्नाम जिह्वा च वशवर्तिनी ।
तथापि नरकं यान्ति धिग्धिगस्तु नराधमान ॥

(गरुण पुराण)

अर्थ – भगवान् का नाम बड़ा ही सरल व सुलभ है और जिह्वा भी वश में है अर्थात् अनुकूल है; परन्तु फिर भी लोग कितने अभागे हैं, भगवन्नाम नहीं लेते हैं और नरक को जाते हैं – ऐसे नीच लोगों को धिक्कार है।

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति-
स्तत्रार्पिता <u>नियमितः स्मरणे न कालः</u> ।
एतादृशी तव कृपा भगवन्ममापि
दुर्दैवमीदृशमिहाजनि नानुरागः ॥

(शिक्षाष्टकम् २)

अर्थ – हे प्रभो ! आपने अपने नामों में अपनी अनन्त शक्ति को स्थापित कर दिया है और उन नामों के स्मरण करने में कोई काल का व्यवधान भी नहीं रखा; अर्थात् किसी भी समय अपने नामों का उच्चारण, स्मरण कर सकते हैं; यह वस्तुतः आपकी अहैतुकी कृपा ही तो है। परन्तु फिर भी हमारा ऐसा दुर्भाग्य है, कि आपके मंगलमय नामों के प्रति अनुराग उत्पन्न नहीं होता है।

<u>नियमितः स्मरणे न कालः</u> – भगवन्नाम-कीर्तन करने में सबका अधिकार है। इसमें न तो कोई वर्णाश्रम का व्यवधान है, न देश-काल का व्यवधान है, कोई भी मनुष्य किसी भी समय, किसी भी अवस्था में भगवान् का नाम ले सकता है। भगवान् का नाम हर तरह से मंगल ही करता है।

शंकराचार्य जी ने कहा है –

भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते ।
सम्प्राप्ते सन्निहते मरणे नहि नहि रक्षति डुक्रीञ् करणे ॥

(चर्पट पंजरिका)

अर्थ – अरे मूढ़मते ! भगवान् का भजन कर ! गोविन्द नाम ले ! मृत्यु के निकट आने पर तब 'डुकृञ् करणे' आदि व्याकरण के धातु-सूत्र तेरी रक्षा नहीं कर सकते हैं।

'राधा' नाम की महिमा –

अनुल्लिख्यानन्तानपि सदपराधान् मधुपति-
र्महाप्रेमाविष्टस्तव परमदेयं विमृशति ।
तवैकं श्रीराधे गृणत इह नामामृतरसं
महिम्नः कः सीमां स्पृशतु तव दास्यैकमनसाम् ॥

अर्थ – जो 'राधा' नाम लेता है; भगवान् श्रीकृष्ण उसके अनन्त अक्षम्य अपराधों को भी क्षमा कर देते हैं और इतने पर भी उन्हें सन्तुष्टि नहीं होती तो विचार में पड़ जाते हैं कि इसको क्या दिया जाय? अर्थात् जो 'राधा' नाम लेता है इसे क्या सर्वोत्तम वस्तु दी जाय?

चक्रं चक्री शूलमादाय शूली पाशं पाशी वज्रमादाय वज्री ।
धावन्त्यग्रे पृष्ठतो बाह्यतश्च राधा राधा वादिनो रक्षणाय ॥

अर्थ – जो मनुष्य 'राधा' नाम लेता है भगवान् विष्णु चक्र लेकर, शिव जी त्रिशूल लेकर, धर्मराज पाश लेकर, इन्द्र वज्र लेकर उसकी रक्षा के लिये उसके आगे-पीछे दौड़ते हैं।

महापुरुषों की वाणियों में भगवन्नाम महिमा

श्रीतुलसीदास जी की वाणी में –

तुलसी जाके बदन ते धोखेहु निकसत राम ।
ताके पग की पगतरी मोरे तन को चाम ॥

राम जपु राम जपु राम जपु बावरे ।
घोर भवनीर निधि नाम निज नाव रे ॥

तुलसी भगत सुपच भलो, जपै रैन दिन राम ।
ऊँचो कुल केहि काम को, जहाँ न हरि को नाम ॥

राम नाम को अंक है सब साधन है सून ।
अंक गये कछू हाथ नहीं अंक रहे दसगून ॥

न बचै कोऊ पण्डित वेद पढ़े, न बचे कोऊ ऊँची चिनाये अटा ।
न बचै कोऊ जंगल बास किये, न बचै कोऊ शीश बढ़ाये जटा ।
दिन चारि चलाचल यो 'तुलसी', नर नाहक कों सब ठाट ठटा ।
जो भलाई चहो '*राधेश्याम*' रटो, नहिं आय अचानक काल डंटा ॥

न मिटै भव संकट दुर्घट है, तप तीरथ जन्म अनेक अटौ ।
कलि में न विराग न ज्ञान कहूँ, सब लागत फोकट झूठ जटौ ।
नट ज्यौं जनि पेट कुपेंटक कोटिक, चेटक कौतुक ठाट ठटौ ।
'तुलसी' जो सदा सुख चाहिय तौ, रसना निसि वासर राम रटौ ॥

नर तैं जनम पाइ कहा कीनौ ।
उदर भर्यो कूकर सूकर ज्यौं, प्रभु कौ नाम न लीनौ ॥

लाखन में एक बात तुलसी बताये जात,
जनम जौ सुधारा चाहौ राम-नाम लीजिये ॥

श्रीसूरदास जी की वाणी में –

हमारे निर्धन के धन राम ।
चोर न लेत घटत नहिं कबहूँ, आबत गाढ़े काम ॥
जल नहिं बूड़त अगिनि न दाहत, है ऐसो हरि-नाम ।

बैकुंठनाथ सकल सुख दाता, 'सूरदास' सुख-धाम ॥

कहत हैं आगैं जपिहैं राम ।
बीचहिं भई और की औरे, परयो काल सौं काम ॥

क्यौं तू गोबिन्द नाम बिसारौ ।
अजहूँ चेति, भजन करि हरि कौ, काल फिरत सिर ऊपर भारौ ॥

को को न तरयो हरि-नाम लियें ।
'सूरदास' बिमुख जो हरि तैं, कहा भयौ जुग कोटि जियें ॥

पढौ भाई, कृष्ण-मुकुंद-मुरारि ।
चरन-कमल मन सनमुख राखौ, कहूँ न आवै हारि ॥

है हरि नाम को आधार ।
और इहिं कलिकाल नाहीं, रह्यौ बिधि-ब्यौहार ॥
नारदादि सुकादि मुनि मिलि, कियौ बहुत बिचार ।
सकल श्रुति-दधि मथत पायौ, इतोई घृत-सार ॥
दसौं दिसि तें कर्म रोक्यो, मीन कौं ज्यौं जार ।
सूर हरि कौ सुजस गावत, जाइ मिटि भव-भार ॥

श्रीकबीरदास जी की वाणी में –

कबिरा सब जग निर्धना धनवन्ता नहिं कोय ।
धनवन्ता सोइ जानिये जाके राम नाम धन होय ॥

चाहौ एक राम जाको जपै आठो जाम ।
और दाम सों न काम जामें भरें कोटि रोग हैं ॥

पढ़ो रे भाई! राम गोविन्द हरी ।
जप तप साधन कछु नहिं लागत, खरचत नहिं गठरी ।
संतति संपति सुख के कारन, जासों भूल परी ।
कहत 'कबीर' जा मुख राम न, वा मुख धूर परी ॥

श्री स्वामी हरिदास जी की वाणी में –

'हरि के नाम कौ आलस कत करत है रे काल फिरत सर साँधे ।'

हरि भजि, हरि भजि, छाँड़ि मान नर तन कौ ।
मति बंछै मति बंछै रे तिल-तिल धन कौं ॥
अनमांग्यौ आगैं आवैगो, ज्यौं पल लागै पलकौं ।
कह श्री हरिदास, मीच ज्यौं आवै, त्यौं धन है आपुन कौं ॥

श्रीहितहरिवंश जी की वाणी में –

तातें भैया मेरी सौं, कृष्णगुन संचु ॥
कुत्सित बाद-बिकारहिं, परधनु, सुनु सिख परतिय बंचु ।
मनि-गुन-पुंज जु ब्रजपति छाँड़त हित हरिबंस सुकर गहि कंचु ॥
पायो जानि जगत में सब जन कपटी कुटिल कलिजुगी टंचु ।
इहिं परलोक सकल सुख पावत, मेरी सौंह कृष्ण गुन संचु ॥

श्रीहरिराम व्यास जी की वाणी में –

व्यास नाम सम नाम है, ता सम और न कोइ ।
नामी ते प्रगट्यो जदपि, तद्यपि गरुओ होइ ॥

किशोरी तेरे चरननि की रज पाऊँ ।
बैठि रहौं कुंजनि के कोने, स्याम राधिका गाऊँ ॥

श्रीनरसी जी की वाणी में –

नारायन नूं नाम न लेतां वारे तेने तजिये रे ।
मनसा वाचा कर्म करीने लक्ष्मी वर ने भजिये रे ॥
कुल ने तजिये कुटुम ने तजिये, ताजिये मां ने बाप रे ।
भगिनी सुत दारा ने ताजिये जेम तज कंचुकी साँपरे ॥

भरतखण्ड भूतल मां जनमी जेणे गोविन्द नाम गुण गाया रे ।
धन-धन रे एना मात-पिता ने सफल करी एना काया रे ॥

श्रीमीराबाई जी की वाणी में –

नहिं ऐसो जनम बारम्बार ।
राम नाम का बाँध बेड़ा, उतर परले पार ॥

पायो जी म्हे तो राम रतन धन पायो ।
बस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा कर अपनायो ॥
जनम जनमकी पूँजी पाई, जगमें सभी खोवायो ।
खरचै नहिं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो ॥

राम-नाम-रस पीजै मनुआँ, राम-नाम-रस पीजै ।
तज कुसंग, सतसंग बैठ नित, हरि-चरचा सुण लीजै ॥

मेरौ मन रामहि राम रटै रे ।
राम-नाम जप लीजै प्राणी, कोटिक पाप कटै रे ॥

श्रीनामदेव जी की वाणी में –

कंचन मेरु सुमेरु, हय-गज दीजै दाना ।
कोटि गऊ जो दान दे, नहिं नाम समाना ॥

अस मन लाव नाम रसना ।
तेरो बहुरि न होइ जरा-मरना ॥

श्रीसरस माधुरी जी की वाणी में –

सरण श्री वृन्दावन की जइये ।
राधेश्याम नाम रटि रसना, आँसू दृगन बहइये ।
कलियुग केवल कीर्तन करनौ बरनौ वेद ।
सरस माधुरी हरि मिले सतगुरु दीन्हों भेद ॥

श्रीघाटम जी की वाणी में –

जे नर रसना नाम उचारें ।
केतिक बात आपु तरिवे की कोटि पतित निस्तारैं ॥

श्रीगदाधरभट्ट जी की वाणी में –

है हरि ते हरिनाम बड़ौ रे, ताको मूढ़ करत कत झेरौ ।
सुत हित नाम अजामिल लीनों, या भव में न कियो फिरि फेरौ ॥
पर अपवाद स्वाद जिय राच्यौ, वृथा करत बकवाद घनेरौ ।
ताको दसयों अंश 'गदाधर', हरि हरि कहत जात कहा तेरौ ॥

कुछ महत्त्वपूर्ण दोहे

राम नाम जपते रहो जब लगि घट में प्रान।
कबहुँक दीनदयाल के भनक परैगी कान॥

कबिरा यह तन जात है सकै तो राख बहोर।
खाली हाथों वे गये जिनके लाख करोर॥

कबिरा यह तनु जात है सकै तो ठौर लगाय।
कै सेवा कर साधु की कै हरि के गुण गाय॥

सौ पापन का मूल है, एक रुपैया रोक।
साधू होय संग्रह करै, मिटै न संशय शोक॥

करनी बिन कथनी कथै, अज्ञानी दिन-रात।
कूकर जिमि भूसत फिरे, सुनी सुनायी बात॥

धन जोबन यो जायगो, जा विधि उड़त कपूर।
नारायण गोपाल भज, क्यों चाटै जग धूर॥

नारायण हरि भजन में, तू जनि देर लगाय।
का जाने या देर में, श्वासा रहे की जाय॥

दो बातन को भूल मत जो चाहै कल्यान।
नारायण एक मौत को, दूजे श्री भगवान॥

जाही पैड़ें मूत है, वाही पैड़ें पूत।
राम भजै तो पूत है, नहीं मूत का मूत॥

चलती चाकी देखिके, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, साबित रहा न कोय॥

साधू होय संग्रह करै, दूजे दिन को नीर।
तरै न तारै और को, यों कह दास कबीर॥

कथा कीरतन कलि विषे, भवसागर की नाव।
कह कबीर जगतरन को, नाही और उपाव॥

कथा कीरतन करन की जाके निसदिन रीत।

कह कबीर वा दास से निश्चय कीजे प्रीति ॥

चलौ चलौ सब कोइ कहैं, पहुँचे विरला कोय ।
एक कंचन एक कामिनी, दुर्गम घाटी दोय ॥

जहाँ काम तहाँ राम नहिं, जहाँ राम नहिं काम ।
तुलसी कहो कैसे रहें, रवि रजनी इक ठाम ॥

हाड़ जलै ज्यों लाकरी, केश जलै ज्यौं घास ।
सब जग जलता देख के, भया कबीर उदास ॥

कबीरा निंदक ना मिलै पापी मिलै हजार ।
एक निन्दक के शीश पर कोटिन पाप पहाड़ ॥

आवत गाली एक है पलटत होय अनेक ।
कबीरा ताही न पलटिए रही एक की एक ॥

आवा बुलावा राम का दिया कबीरा रोय ।
जो सुख होत सत्संग में सो वैकुण्ठ ना होय ॥

लूटि सकै तो लूटि ले राम नाम की लूटि ।
पाछे फिर पछताहुगे प्रान जाहिं जब छूटि ॥

कबिरा सोता क्या करे जागि न जपै मुरारि ।
एक दिना है सोवना लंबे पाँव पसारि ॥

सुमिरन की सुधि यों करै जैसे कामी काम ।
एक पलक बिसरै नहीं निस दिन आठों याम ॥

कबिरा संगत साधु की ज्यों गंधी का वास ।
जो कछु गंधी दे नहिं तौ भी बास सुबास ॥

गोधन गजधन बाजि धन और रतन धन खान ।
जब आवै संतोष धन सब धन धूरि समान ॥

चाह गई चिंता मिटी मनुआँ बेपरवाह ।
जिनको कछू न चाहिए सोई साहंसाह ॥

कबीरा सो मुख धन्य है जिहिं मुख निकलै राम ।
देही किसकी बापुरी, पवित्र होहै ग्राम ॥

सांई से साँचा रहो सांई सांच सुहाय ।
भाँबै लंबे केस रख भांवै घोट मुँड़ाय ॥

कामी क्रोधी लालची इनतें भक्ति न होय ।
भक्ति करै कोई सूरमा जाति बरन कुल खोय ॥

राधा राधा नाम कूँ सपने हू जो लेत ।
ताकौ मोहन सांवरौ, रीझ अपन कों देत ॥

नाम निरादर मत करो आदर दिन दुलराई ।
श्री बिहारीदास ममता बिना नामै बेचै खाई ॥

व्यास पराई कामिनी कारी नागिन जानि ।
छूवत ही मर जावेगो गरुड़ मन्त्र नहिं मानि ॥

नारायन हरि भजन में यह पाँचों न सुहात ।
बिषय भोग निद्रा हँसी जगत प्रीति बहु बात ॥

चटक मटक नित छैल बन तकत चलत चहुँ ओर ।
नारायन यह सुधि नहीं आज मरै कै भोर ॥

रसना कटौ जु अन रटौं, निरखि अन फुटौ नैन ।
श्रवण फुटौ जो अन सुनौं, बिनु राधा यश बैन ॥

दयो राम को लें हम आशा करें न अन्य ।
लाख खाख सम दें तजि राखें भक्ति अनन्य ॥

लक्ष्मी के सुत चार हैं धर्म अग्नि नृप चोर ।
धर्म हेतु खरचे नहीं तीन करे भड़ फोर ॥

जो बिषया संतन तजी मूढ ताहि लपटात ।
ज्यों नर डारत वमन कर स्वान स्वाद सों खात ॥

गिरह गाँठ नहिं बाँधते जब देवे तब खाहिं ।
गोविन्द तिनके पीछे फिरें मत भूखे रह जाहिं ॥

तन पवित्र सेवा किये धन पवित्र कर दान ।
मन पवित्र हरि भजनु कर होत त्रिविध कल्यान ॥

जननी जनै तो भक्तजन कै दाता कै सूर ।

नाहीं तौ तू बाँझ भलि क्यों खोवै निज नूर ॥

वृन्दावन में बसत ही एतो बड़ो सयान ।
जुगल चन्द्र के भजन बिन निमिष न दीजे जान ॥

कौड़ी कौड़ी जोड़ के जोड़े लाख करोड़ ।
चलती बेर न कछु मिल्या लई लंगोटी तोड़ ॥

जिह्वा गुरु गोविन्द भज कर्ण सुनौं हरि नाम ।
कह नानक सुन रे मना परहि न यम के धाम ॥

राम भजत बिटिया भली राम बिमुख नहिं पूत ।
शबरी तो हरिधाम गई धुंधकारी भया भूत ॥

संसार लाडू भूत का दोनों बिधि पछताय ।
खाये तो भी पछताय न खाये तो भी पछताय ॥

नौ द्वारन को पींजरा पंछी बैठ्यो भौन ।
रहवे को अचरज महा उड़वे अचरज कौन ॥

दर दर डोलत दीन है घर घर जाचत जाय ।
दिये लोभ चश्मा चखनि लघुहु बड़ो जनाय ॥

रहिमन याचता गहे बड़े छोटे है जात ।
नारायण हुँ को भयो बावन अंगुल गात ॥

राम नाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहेरहु, जौ चाहसि उजियार ॥
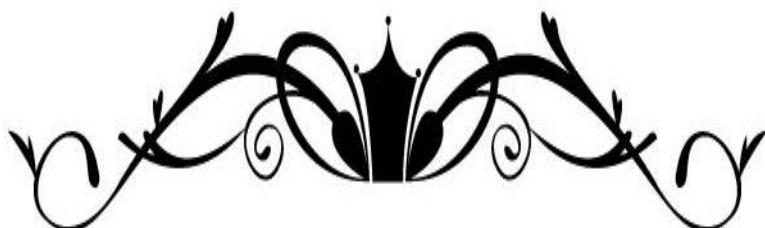
कथा-कीर्तन ही जीवन का आधार

बिना कथा-कीर्तन के कोई जीवन, जीवन नहीं है; ऐसे जीने से कोई लाभ नहीं, जिसमें भगवद्भक्ति नहीं है। वे जीवित होते हुए भी मुर्दे हैं, जो भगवान् के कथा-कीर्तन से विमुख हैं।

जिन्ह हरिभगति हृदयँ नहिं आनी ।
जीवत सव समान तेइ प्रानी ॥

(रा.च.मा.बाल. ११३)

अथवा

जीवञ्छवो भागवताङ्घ्रिरेणुं
न जातु मर्त्योऽभिलभेत यस्तु ।

(भा. २/३/२३)

केवल स्वाँस चल रही है धौंकनी की तरह लेकिन हैं वे मुर्दे। इसलिए जब तक ये जीवन है, हर क्षण भगवद्-गुणगान में बीतना चाहिए। **'कथामात्रैक जीविनः'** कथा-कीर्तन को अपना जीवन बना लो। जैसे सनकादिक का लक्षण लिखा है, वे चारों भैया परस्पर भगवच्चर्चा में प्रत्येक क्षण निमग्न रहते हैं; इसलिए ऐसा बनना चाहिए, नहीं तो वह भक्त नहीं जिसके जीवन में भगवद्-गुणानुवाद नहीं है।

सदा वैकुण्ठनिलया हरिकीर्तनतत्पराः ।
लीलामृतरसोन्मत्ताः कथामात्रैकजीविनः ॥

(भा. माहा. २/४७)

भगवान् की कथा श्रवण करो, कीर्तन करो, यही जीवन है। जो स्थान (घर, आश्रम ....आदि) भगवान् के कथा-कीर्तन से रहित है, वह मुर्दाखाना है। वहाँ कदापि नहीं रहना चाहिए। चाहे वह कितना भी अच्छा स्थान है। अरे, इस भूलोक की तो बात ही छोड़ो यदि देवलोक, स्वर्गलोक, ब्रह्मलोक भी है तो उसे भी छोड़ दो। ये बात श्रीमद्भागवत् में कही गयी है –

न यत्र वैकुण्ठकथासुधापगा
न साधवो भागवतास्तदाश्रयाः ।
न यत्र यज्ञेशमखा महोत्सवाः
सुरेशलोकोऽपि न वै स सेव्यताम् ॥

(भा. ५/१९/२४)

जहाँ तीन चीजें अगर नहीं हैं तो वहाँ एक क्षण भी नहीं रहो –

1. कथामृत की नदी – जहाँ भगवान् की लीला-कथाओं का गुणगान नहीं होता है, केवल वाद-विवाद, ग्राम्य कथाएँ (व्यर्थ-चर्चाएँ) होती हैं, वहाँ एक क्षण के लिए भी नहीं रहना चाहिए।

2. भगवान् के आश्रित सन्तजन – जहाँ साधु-सन्त, भक्त नहीं हैं। कैसे साधु-सन्त? भगवान् के आश्रय वाले; लड्डुआ-पेड़ा, विषय-भोग, सेठों के आश्रय वाले नहीं।

भगवान् के आश्रित जो संत हैं, उनकी पहचान क्या है? लाल कपड़ा कि पीला कपड़ा कि सफेद कपड़ा.....? ये सब उनकी पहचान नहीं है, उनकी तो एक ही पहचान है –

तस्मिन्महन्मुखरिता मधुभिच्चरित्र-
पीयूषशेषसरितः परितः स्रवन्ति ।
ता ये पिबन्त्यवितृषो नृप गाढकर्णै-
स्तान्न स्पृशन्त्यशनतृड्भयशोकमोहाः ॥

(भा. ४/२९/४०)

जहाँ वे निवास करते हैं वहाँ भगवान् मधुसूदन के चरित्र (कथाओं) की चारों ओर नदियाँ बहती रहती हैं, यानी हर समय दिन-रात भगवान् का गुणानुवाद होता रहता है। बस यही पहचान है सच्चे महात्माओं की व सच्चे आश्रम की। अतः वहाँ जो रहते हैं, संतों के मुख से निकले कथामृत का अतृप्त होकर पान करते हैं तो उनको माया के हथकंडे छू नहीं सकते।

3. भगवान् के उत्सव-महोत्सव – जहाँ यज्ञेश भगवान् का यज्ञ नहीं है, यज्ञ कौन सा? उत्सव-महोत्सव अर्थात् समारोह के साथ जहाँ भगवान् का कीर्तन, नृत्य-गान न होता हो।

अगर ये तीनों बातें जहाँ नहीं है तो देवलोक भी है, उसे भी छोड़ दो। यहाँ ब्रह्मलोक भी अर्थ लगाया है आचार्यों ने, कि चाहे ब्रह्माजी का लोक है तो उसे भी छोड़ दो।

ये कृष्ण-कृपा है कि यहाँ (मान मंदिर) पर तीनों बातें एक साथ हैं, यहाँ निरन्तर कथा-कीर्तन चलता रहता है और साधु भी यहाँ जो हैं, वे सब भगवान् के आश्रय वाले हैं। लड्डू-पेड़ा दास नहीं हैं और नित्य संकीर्तन-महोत्सव यहाँ होता है – एक साथ सैकड़ों लोग नाचते-गाते हैं। ऐसा संकीर्तन संसार में कहीं नहीं है कि जहाँ तीन-चार सौ लोग नित्य नृत्य-गान करते हों। ये तीनों बातें केवल कृष्ण-कृपा से ही संभव हैं। इन्हीं से इस मानमंदिर की शोभा है।

'शोभा' वैभव-ऐश्वर्य से नहीं होती, पैसे से नहीं होती। मानमंदिर में जो धन प्रभु ने दिया है, वह शायद संसार में कहीं मुश्किल से होगा, नहीं तो नहीं होगा, प्रायः नहीं होगा। तीनों बातें एक साथ कहीं नहीं मिलती हैं। जब देवलोक में नहीं हैं तो फिर और कहाँ होंगी, अन्य किसी आश्रम की तुलना ही गलत है।

कुछ दिन पहले एक दुर्घटना घटी, उसमें एक व्यक्ति की मृत्यु हो गयी तो हमसे लोगों ने कहा कि सारा गाँव दुखी है, आज कीर्तन नहीं होगा।

हमने कहा – 'कीर्तन तो होगा; कीर्तन तो उस दिन भी नहीं रुका था, जिस दिन हमारी माँ की मृत्यु हुई थी।' लोगों ने हमसे कहा था – 'दाह संस्कार हो जाने दो, उसके बाद कथा होगी, हमने कहा नहीं, **'कथामात्रैक जीविनः'** कथा तो जरूर होगी।' वहीं पास में उनकी लाश पड़ी रही और कथा भी हुई, कीर्तन भी हुआ। इसीलिए कीर्तन हॉल बनाया गया, यद्यपि बनाने में बदनामी भी हुई, लोगों ने निंदा की कि इतनी बड़ी बिल्डिंग बना रहे हैं, लेकिन हमने उसकी परवाह नहीं की, क्योंकि ***जहाँ आराधना होती है, भगवान् का उत्सव होता है वह स्थान सैकड़ों मंदिर से भी बढ़कर है।*** इसलिए हमलोग जब तक जीवित हैं, कथा-कीर्तन नहीं रुकेगा क्योंकि यह हमारा जीवन है **'कथामात्रैक जीविनः'**। इसी तरह की निष्ठा कथा-

कीर्तन के प्रति हर भक्त की होनी चाहिए कि कथा-कीर्तन ही हमारा जीवन बन जाए।

भागवत में लिखा है कि अगर किसी गृहस्थी का घर भी है और वहाँ नित्य भगवद्-गुणगान होता है तो वह घर भी तीर्थ, मंदिर बन जाता है। इसी कारण से गृहस्थ ब्रजवासी ब्रह्मा, शिवादि के द्वारा भी पूजनीय बन गए थे क्योंकि ब्रजवासी लोग दिन-रात कृष्ण-गुणगान करते थे। संसार का हर घर भगवान् के कथा-कीर्तन के प्रभाव से तीर्थ बन सकता है।

गृहेष्वाविशतां चापि पुंसां कुशलकर्मणाम् ।
मद्वार्तायातयामानां न बन्धाय गृहा मताः ॥

(भा. ४/३०/१९)

गृहस्थी लोग भी हैं, अगर उनके घर में नित्य भगवान् की कथा या कीर्तन होता है तो वे बन्धन में नहीं आयेंगे, सरलता से भवसागर पार कर जाएँगे।

यहाँ (मानमंदिर में) जो कीर्तन होता है उसको विदेशों में भी बैठे लोग इंटरनेट के माध्यम से नियम से सुनते हैं। अमेरिका, यूरोपादि देशों में रहकर भी उनको विज्ञान के चमत्कार से नित्य सत्संग की प्राप्ति है और श्रीमद्भागवत के इस श्लोक के अनुसार जो नित्य नियम से सत्संग-कीर्तन सुनते हैं उनको भी निश्चय ही भवबंधन से मुक्त होना चाहिये।

भगवन्नाम-संकीर्तन – कलिमलहरण का साधन

यों तो कलियुग तभी आ गया था जब भगवान् श्रीकृष्ण इस धराधाम को छोड़कर नित्यधाम को चले गये थे। तभी तो वृषरूपधारी धर्म के तीन चरण कलियुग ने तोड़ दिये थे और एक पैर से कलियुग के द्वारा प्रताड़ित वृषभ (धर्म) अपनी रक्षा की प्रार्थना प्रभु से कर रहा था। तभी परीक्षित जी ने आकर कलियुग को दण्ड देने की सोचा मगर अपने चातुर्य से कलियुग ने पाँच स्थान अपने रहने के लिए माँग लिये, तभी से निरन्तर कलियुग बढ़ता ही चला आ रहा है। यही कारण है आज लोग अनन्त कष्ट पा रहे हैं तथा इस जन्म के पश्चात् भी अनन्त यातनाओं को भोगने के लिए चौरासी लाख योनियों में जाने का रास्ता तैयार कर रहे हैं।

महापुरुष भगवद्कृपा से अवतरित होते हैं और उनका दया-द्रवित हृदय प्रत्येक प्राणी के कष्ट हरण के लिए सदा तत्पर रहता है। ब्रजवासियों पर ही क्या बल्कि समस्त जगत पर कृपा करने के लिए, ऐसे ही **"परम विरक्त संत श्री रमेश बाबा जी महाराज"** का अवतरण हुआ और जो प्रयाग की अपनी जन्मभूमि से अल्पायु में ही ब्रजनिष्ठा के भाव से ब्रजभूमि के पावन स्थल 'श्री धाम बरसाना' की रमणीय ब्रह्माचल तलहटी के शिखर पर राधारानी के मानभवन में रहने लगे। वहाँ रहकर उन्होंने ब्रजवासियों को प्रेरित करना प्रारम्भ किया कि इस कलियुग में कोई जीव कष्टसाध्य साधन नहीं कर सकता, अतः भगवन्नाम से बड़ा कोई साधन नहीं है, यह अत्यन्त ही सरल और सुलभ है। तभी तो महापुरुषों ने कहा है –

भजो रे भैया राम गोविन्द हरि ।
जप-तप साधन कछु नहीं लागत खरचत नहिं गठरी ॥
संतति संपति सुख के कारण जासों भूल परी ।
कहत कबीर जा मुख राम न वा मुख धूर परी ॥

भगवान् ने भी स्वधाम गमन से पूर्व अपनी सारी शक्ति अपने नाम में स्थापित कर दी, भगवान् के नाम में भगवान् से भी अधिक शक्ति है। तुलसीदास जी ने भी कहा है –

राम एक तापस तिय तारी ।
नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥

(रा.च.मा.बाल. २४)

श्री राम ने तो एक अहिल्या का उद्धार किया परन्तु रामनाम ने करोड़ों दुराचारियों की मति (बुद्धि) सुधार दी, तो आवश्यकता है विश्वास की, देखो ! बिना विश्वास के तो भगवान् प्रत्यक्ष दर्शन भी दे दें तो भी उन्हें हम नहीं जान पायेंगे। भगवन्नाम की धूम बाबा महाराज ने गहवरवन, बरसाना से प्रारम्भ की और ब्रजमण्डल के अतिरिक्त हजारों गावों तक फैला दिया। घर-घर भगवन्नाम प्रारम्भ हो गया, लोगों में भगवन्नाम के प्रति आस्था जागृत हुयी। भगवन्नाम संकीर्तन जहाँ होता है भगवान् वहाँ निश्चित ही आते हैं। भगवान् स्वयं कहते हैं –

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

भगवान् बोले न तो मैं वैकुण्ठ में रहता हूँ और न ही जो बड़ी-बड़ी कष्टसाध्य साधनाएँ करते हैं उनके हृदय में रहता हूँ, जहाँ मेरे भक्त प्रेम से गाते, नाचते हैं मैं वहीं रहता हूँ। इसलिए ब्रज के प्रत्येक गाँव में सर्वप्रथम बाबा महाराज ने मानमंदिर के सन्तों व साध्वी बालिकाओं को भेजा और वहाँ जाकर सभी ने भगवन्नाम संकीर्तन की निष्काम सेवा की, देखो कामना शून्य होकर अगर कोई भी कार्य किया जाता है तो भगवान् उस सेवा को अवश्य सफल बनाते हैं। जहाँ घर-घर में कलह, क्लेश, अपमान, राग-द्वेष रहता था, वहाँ अब मधुर-मधुर भगवन्नाम ध्वनि होने लगी है। यद्यपि प्रारम्भ में परिहास का भाजन भी कहीं-कहीं बनना पड़ा परन्तु निःस्पृह सेवा में स्वतः ऐसी शक्ति होती है कि वह कलियुग का सफाया कर देती है। ब्रज के सभी गाँवों में 'मानमंदिर सेवा संस्थान' की ओर से “ढोलक-माइक” निशुल्क बाँटे गये और उन्हें प्रातः व संध्या भगवन्नाम

संकीर्तन के साथ प्रभातफेरी निकालना प्रारम्भ मानमंदिर के साध्वियों, संतों तथा बाल-आराधकों ने कराया। प्रभातफेरी से न केवल मनुष्यों का अपितु सभी जीवों का कल्याण होता है। असंख्य कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, जो जीव बोल नहीं सकते उनका कल्याण कैसे होगा? सभी प्राणियों के कल्याण की भावना से बाबा महाराज ने प्रभातफेरी चलायी क्योंकि –

पशु-पक्षी-कीट आदि बलिते ना पारे।
शुनिलेइ हरिनाम तारा सब तरे॥

नाम महिमा के सिद्धांतों, कथानकों, प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से ब्रजवासियों को नामनिष्ठ बनाया। प्रातः काल किसी गाँव में चले जाओ तो बड़ा ही मनोहारी वातावरण लगता है, कानों को मधुर लगने वाली पावन भगवन्नाम-ध्वनि सर्वत्र सुनाई पड़ती है। इससे न केवल भगवन्नाम-कीर्तन की जागृति ही हुयी अपितु लोगों में पारस्परिक प्रेम, सौहार्द की भी वृद्धि हुयी। गाँव की परिक्रमा से शारीरिक स्वास्थ्य लाभ भी होने लगा और लोगों ने प्रभातफेरी को अपने जीवन का अंग बना लिया।

यह प्रक्रिया न केवल ब्रज तक ही सीमित रही वरन् तीस हजार गाँवों तक फ़ैल गयी। मानमंदिर की बालिकाएँ जहाँ-जहाँ जाती हैं, वहाँ भिक्षा माँगती हैं और भिक्षा में कोई द्रव्य, वस्तु अथवा भोजन नहीं अपितु भगवन्नाम की भिक्षा माँगा करती हैं और सभी को प्रतिज्ञा-बद्ध करती हैं कि आज के पश्चात् हमारे परिवार के किसी सदस्य का जीवन में एक भी दिन भगवन्नाम के बिना नहीं जाएगा, चूँकि किसी का कुछ लगता नहीं है तो सभी एकत्रित हजारों व्यक्ति भगवन्नाम के रंग में सहज में रंग जाते हैं। इसके पीछे त्याग की भावना और प्रबल प्रभाव डालती है।

यद्यपि कई स्थानों पर नकारात्मक सोच भी दिखाई पड़ती है परन्तु, जिसे महापुरुषों ने कृपा करके अपना लिया है फिर उसे कभी छोड़ते नहीं, समय-समय पर पुनः गाँवों में जा-जाकर नाम-संकीर्तन की प्रेरणा

मानमंदिर के साधु व साध्वियों के द्वारा दी जाती है। कई स्थानों पर प्रभात फेरियाँ बंद मिलतीं, पूछने पर लोग बताते हैं कि जिस दिन से प्रभातफेरी चली है, गाँव में बहुत लोग मरने लगे अथवा सूखा पड़ने लगा या ओले पड़ गये, फसल नष्ट हो गयी या पशु मरने लगे, इस प्रकार की भ्रांतियों का निवारण करके जनहितकारी भगवन्नाम-कीर्तन व प्रभातफेरी-कार्यक्रम निरन्तर चलाया जा रहा है।

राधे किशोरी दया करो

हे किशोरी राधारानी ! आप मेरे ऊपर दया करिये। इस जगत में मुझसे अधिक दीन-हीन कोई नहीं है अतः आप अपने सहज करुण स्वभाव से मेरे ऊपर भी तनिक दया दृष्टि कीजिये।

राधे किशोरी दया करो ।
हम से दीन न कोई जग में, बान दया की तनक ढरो ।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा, यह विश्वास जो मनहि खरो ।
विषम विषय विष ज्वाल माल में, विविध ताप तापनि जु जरो ।
दीनन हित अवतरी जगत में, दीनपालिनी हिय विचरो ।
दास तुम्हारो आस और (विषय) की, हरो विमुख गति को झगरो ।
कबहुँ तो करुणा करोगी श्यामा, यही आस ते द्वार पर्यो ॥

मेरे मन में यह सच्चा विश्वास है कि श्यामा जू सदा से दीनों पर दया करती आई हैं। मैं अनादिकाल से माया के विषम विष रूपी विषयों की ज्वालाओं से उत्पन्न अनेक प्रकार के तापों की आग में जलता आया हूँ। इस जगत में आपका अवतार दीनों के कल्याण के लिए हुआ है। हे दीनों का पालन करने वाली श्री राधे! कृपा करके आप मेरे हृदय में निवास कीजिये। मैं आपका दास होकर भी संसार के विषयों और विषयी प्राणियों से सुख पाने की आशा किया करता हूँ। आप मेरी इस विमुखता के क्लेश का हरण कर लीजिए। हे श्यामा जू! जीवन में कभी तो ऐसा अवसर आएगा जब आप मेरे ऊपर करुणा करेंगीं, इसी आशा के बल पर मैंने आपके द्वार पर डेरा जमा लिया है।

रसीली ब्रज यात्रा

प्रह्लाद सभा
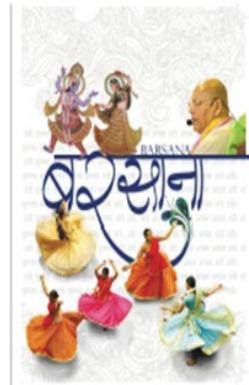
बरसाना
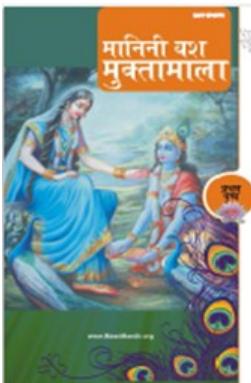
मानिनी यश मुक्तामाला
प्रथम पुष्प
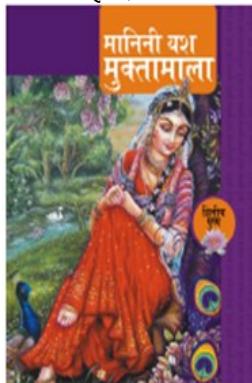
मानिनी यश मुक्तामाला
द्वितीय पुष्प

सारग्राहिता
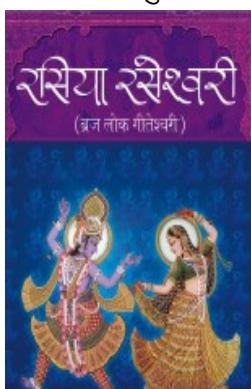
रसिया रसेश्वरी
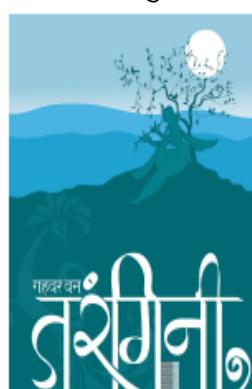
गह्वरवन तरंगिनी

श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान,
गहवर वन, बरसाना, मथुरा,
उत्तर प्रदेश २८१ ४०५ भारतवर्ष
द्वारा प्रकाशित

प्राप्त करने के लिये सम्पर्क करें:
ms@maanmandir.org
+91-98376-79558
+91-99273-38666